kissekahani.com

फोटो : रोशनलाल वसिष्ठ

अनुक्रम

मुखपृष्ठ :

नए साल का स्वागत : प्रदीप कंबोज १

सरस कहानियां :

एक दिन का कंडक्टर : अरुणकुमार आनंद ८
समाधान : राजेशकुमार जैन १२
सोने की चिड़िया : प्रदीपकुमार १६
मूर्ति का रहस्य : अब्दुलगफ्फार छीपा २३
स्वेटर के फंदे : शीला इंद्र २४
दो गौरेयां : भीष्म साहनी २८
सच्चा सिंगार : मालती जोशी ३६
दो पाट दो हाथ : मुकुंदमाधव मेहरोत्रा ४०
खरगोश की हार : विजयकुमार आहूजा ४४

चटपटी कविताएं :

किसको कैसा लगता जाड़ा : सीताराम गुप्त ४
छुट्टियों में आना मेरे गांव : इंदर आउवा ५
नए साल का नया गीत : अशोकरंजन सक्सेना ३३
गीदड़ बोला : यादराम 'रसेंद्र' ५६
पक्के फ्रेंड : निर्मला तिवारी ५६
जन्म-दिवस पर : नारायणलाल परमार ५७
गायक की गंगा : पंकज गोस्वामी ५७
छोटी अठन्नी : निरंजनलाल मालवीय ५७

मजेदार कार्टून-कथाएं :

बुद्धूराम : आबिद सुरती १९
छोटू और लंबू : शैहाब २०

अन्य रोचक सामग्री :

गणतंत्र दिवस की परेड : रोशनलाल वसिष्ठ ६
भोली शंका (कार्टून) : सदगुरु २७
धीरज का फल (बोध कथा) : नारायण गोपालानी ३५
एक थैली के (कार्टून) : रंजित ३९
होनहार सपूत (कार्टून) : नंदलाल शर्मा ४३
डाक टिकटों में गांधी जी (लेख) : गजराज जैन ५३

स्थायी स्तंभ :

छोटी छोटी बातें : ११
शीर्षक प्रतियोगिता-२३ : ३१
कहो कैसी रही (चुटकुले) : किशोरीरमण टंडन ४७
उद्धरण प्रतियोगिता-२७ : ४८
बच्चों की नई पुस्तकें : लक्ष्मीचंद्र गुप्त ५५
रंग भरो प्रतियोगिता-१०३ : ५९

वार्षिक शुल्क : स्थानीय : रु. ६-००
डाक से : रु. ६-५०

संपादक : आनंदप्रकाश जैन

kissekahani.com

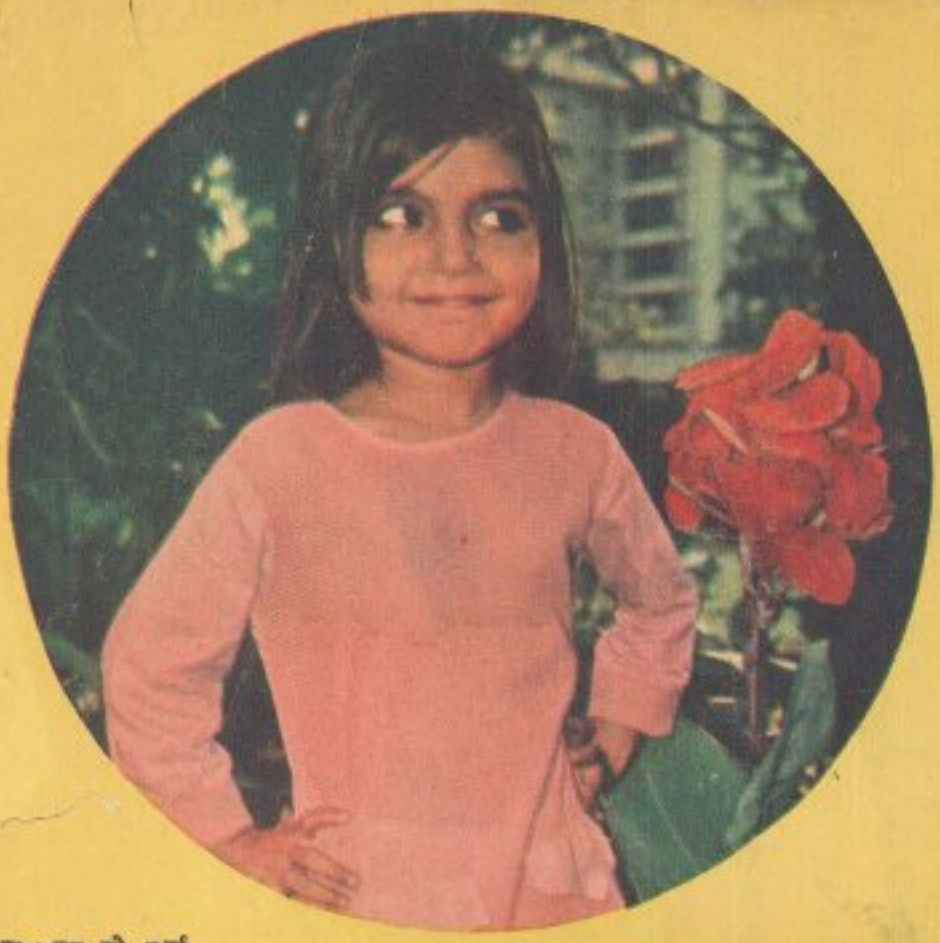

छाया : एम. सी. शर्मा

किसको कैसा लगता जाड़ा

कौन कौन डरता जाड़े से,
किस किस को वह प्यारा?
नन्हे फूल, तुम्हीं बतलाओ,
क्या है नाम तुम्हारा?

गुलाब : मेरा नाम गुलाब, मुझे तो
जाड़ा बहुत सुहाता!
मैं दुनिया को खुशबू देता,
सुबह सुबह खिल जाता!
सूरज की किरणें देती हैं
आ कर साथ हमारा!
हम गुलाब के खिले फूल हैं
प्यारा नाम हमारा!

रजाई : मेरा नाम रजाई,
जो हैं पक्के आलस वाले,
मुझसे चिपटे पड़े, चाय के
खाली करते प्याले!
नाम नहाने के तो उनके
बज जाते हैं बारा!
उनकी आदत पर रोता है
उनका भाग्य-सितारा!

अच्छे बच्चे तो जाड़े से
नहीं कभी भी डरते;
दौड़ लगाते फुरती पाते,
काम समय पर करते!

उनसे जाड़ा चूं करता है—
'तुम जीते मैं हारा!'
ऐसे बच्चे बनो सभी तुम
चमके नाम तुम्हारा!

—सीताराम गुप्त—

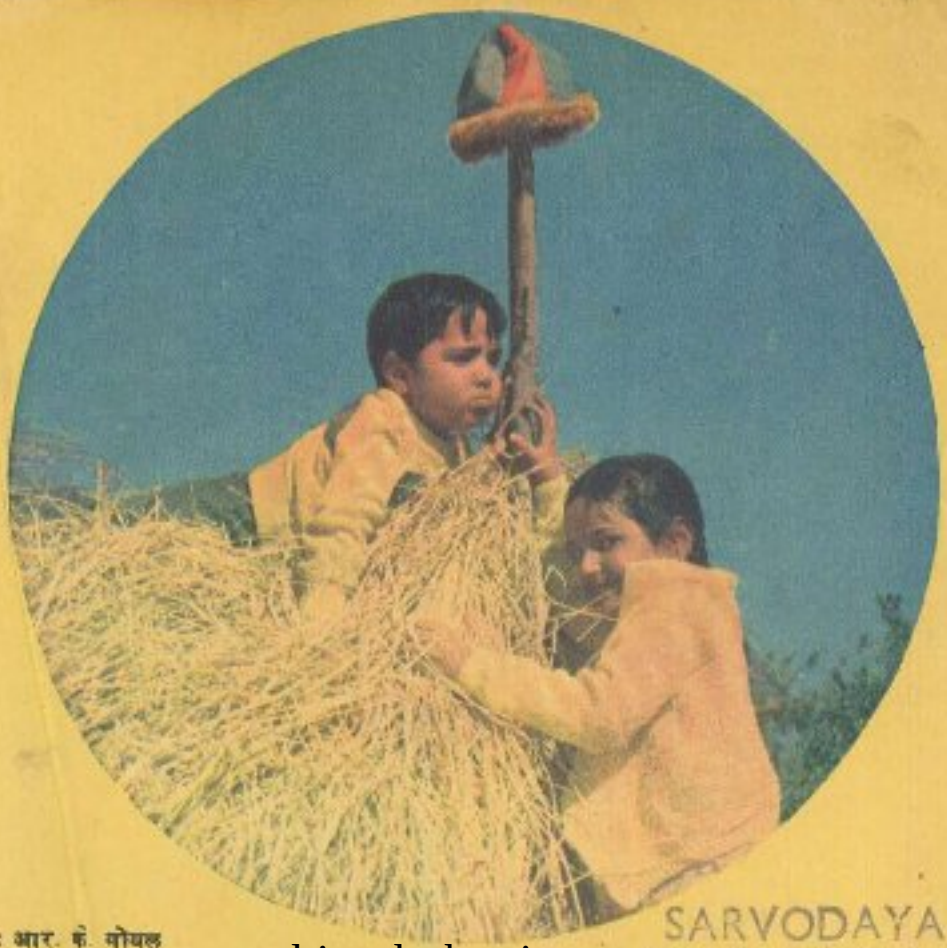

छाया : आर. के. गोयल

SARVODAYA
Milk & Food-Products
Civil Lines, BIJNOR

kissekahani.com

छुट्टियों में आना मेरे गांव

अबकी बार छुट्टियों में आना मेरे गांव!

चीखते न वहां भोंपू मिलों-कारखानों के,
वहां नहीं शोरगुल मोटर, ट्राम, ट्रकों का.
नहीं लाल बत्तियां, न खतरे के हैं निशान,
काम नहीं वहां चोर-ठगों का, उचक्कों का!

वहां नहीं सड़कें कलमुंही कोलतार वाली,
वहां स्वच्छ गोरी गोरी गलियां हैं प्यार वाली;

चलते वक्त लगता है, जैसे टिके हों हमारे
गुलाब के नाजुक नाजुक फूलों ऊपर पांव!

वहां नहीं बिस्कुट, काफी, आइसक्रीम, शरबत,
भैया, वहां नहीं राज मटमैली चाय का!
मक्के के भुट्टे, कच्चे बाजरे के सिट्टे वहां,
वहां है ताजा, मीठा, कच्चा दूध गाय का!

हो जाओगे महीने भर में मोटे-मुस्टंडे तुम;
बिना खाए मांस, मच्छी, मुर्गियों के अंडे तुम

सीख लोगे कबड्डी के, भैया, ऐसे ऐसे गुर,
डूबेगी न कभी टूर्नामेंटों में नाव!

पप्पू पंडित सीखेगा बजाना अलगोजा,
लल्लू भाई सीखेंगे लोक-गीत गाना!
कठपुतली नचाना कल्लू राम जी सीख लेंगे,
गप्पू लूट लेगा गंवई गप्पों का खजाना!

जंगल के वासियों से मिलने हम जाएंगे,
पक्षियों की रंग-बिरंगी पांखें हम लाएंगे,

शाला के 'कल्चरल प्रोग्राम' के दिन;
लगेगा किसी का न हमारे आगे दांव!

—इंदर आउवा—

गणतंत्र की

"अरी चल, खूब हाथी-घोड़े-पालकियां होंगी—और हां, सविता, कविता, ललिता भी तो मिलेंगी!"

"आओ हम भी चलें-खूब मस्ती रहेगी—और हां, [illegible]-सीता भी तो मि[illegible]!"

"पर रास्ते में बो[illegible]हा न दीख जाए कहीं, मरा [illegible] कहीं का!"

दिवस परेड

कलमुंहा—चिरकुट 'दीख जाने' के लिए तैयार!

"हाय राम! वो तो मरा वो खड़ा खंभे से लगा!"

"अरी, किस कबूतर के चक्कर में पड़ी! वह तो अपनी सविता ही है—भेष धरे खड़ी है! हा हा, हा हा!"

फोटो : रोशनलाल वसिष्ठ

कहानी

एक दिन का कंडक्टर

kissekahani.com

हायर सेकंडरी का परिणाम निकला. आशा के विपरीत फर्स्ट डिवीजन आ गई, तो घर में सबकी खुशी का पारावार न रहा. पिता जी कई सप्ताह से अस्वस्थ चल रहे थे. उस दिन उनकी बीमारी भी कहीं दूर भाग गई. आगे की पढ़ाई का कार्यक्रम भी निश्चित हो गया—दिल्ली यूनिवर्सिटी से बी. एस-सी.

दिल्ली के लिए मेरा बोरिया-बिस्तर बांधने से कुछ दिन पहले मां ने कहा—"बेटा, मैंने एक मनौती मानी थी कि यदि तू पास हो गया, तो मैं गुरुद्वारा फतहगढ़ साहब में ग्यारह रुपये का प्रसाद चढ़ाऊंगी. मुझे तो तुम्हारे पिता जी की बीमारी के कारण समय नहीं मिलता, तुम कल सवेरे गुरुद्वारे जाकर प्रसाद चढ़ा आओ. लगता है, तेरे पिता जी भी तभी ठीक होंगे, जब मेरी मनौती पूरी होगी."

मुझे गुरुद्वारे जाने में क्या एतराज हो सकता था. हमारे कस्बे (खरड़) से गुरुद्वारा फतहगढ़ साहब पैंतीस किलोमीटर दूर है. कहा जाता है कि फतहगढ़ साहब में गुरु गोविंदसिंह के आठ और दस वर्ष के दो नन्हे-मुन्हे सुपुत्रों को मुगल बादशाह औरंगजेब ने जीवित दीवार में चिनवा दिया था, क्योंकि उन्होंने अपना धर्म बदलने से इंकार कर दिया था. खरड़-फतहगढ़ साहब रूट पर चलने वाली लीबड़े की बसें ऐसे ही प्रसिद्ध हैं जैसे दिल्ली-कलकत्ता रेलवे लाइन पर राजधानी एक्सप्रेस! ये बसें इतनी सवारियां उठाती हैं कि पूछिए मत. एक बस में अस्सी-नब्बे सवारियां भरी होना साधारण बात है. जैसे मां चक्की से पिसा आटा मुक्कों से दबा-दबा कर कनस्तर में ठूंसती है, उसी तरह इन बसों में कंडक्टर सवारियां लादते हैं.

लीबड़े की बसों का डिपो फतहगढ़ साहब में है. फतहगढ़ से चली हुई रात की आखिरी बस खरड़ के अड्डे पर ठहर जाती है और खरड़ से सुबह पांच बजे चलती है. भीड़ से बचने के लिए मैंने इसी बस से फतहगढ़ जाना तय किया. किंतु अड्डे पर आकर देखा, तो बस की सभी सीटें भर चुकी थीं, पांच-सात सवारियां नीचे खड़ी थीं. मैं भी उनमें शामिल हो गया.

पांच बज कर पांच मिनिट हो चुके थे. ड्राइवर अपनी सीट पर विराजमान था, किंतु निकट के गांव में रहने वाला कंडक्टर अभी तक नहीं आया था, इसलिए बस लेट हो रही थी. सहसा एक आफत टूटी.

कंडक्टर के भाई ने आकर सूचना दी कि उसके भाई को रात पेट में तीखा दर्द उठा, घर वाले उसे बेहोशी की हालत में चंडीगढ़ अस्पताल में ले गए हैं.

सब यात्री सकते में आ गए. उस समय फतहगढ़ साहब से नया कंडक्टर भी नहीं आ सकता था. ड्राइवर बिना कंडक्टर बस ले जाने के लिए तैयार न था. लोग तरह-तरह के सुझाव दे रहे थे, किंतु किसी सुझाव में दम न था.

एक बारह-तेरह साल के हंसमुख छोकरे ने ड्राइवर से कहा—"अगर आप चाहें, तो मैं लोगों से किराया वसूल कर फतहगढ़ डिपो में जमा करा दूंगा."

ड्राइवर ने व्यंग्य से उस छोकरे की तरफ देखा. उसकी निगाहों में ऐसा भाव था कि 'वाह बेटा! लीबड़े की बस और तू करेगा कंडक्टरी!' प्रकट में उसने

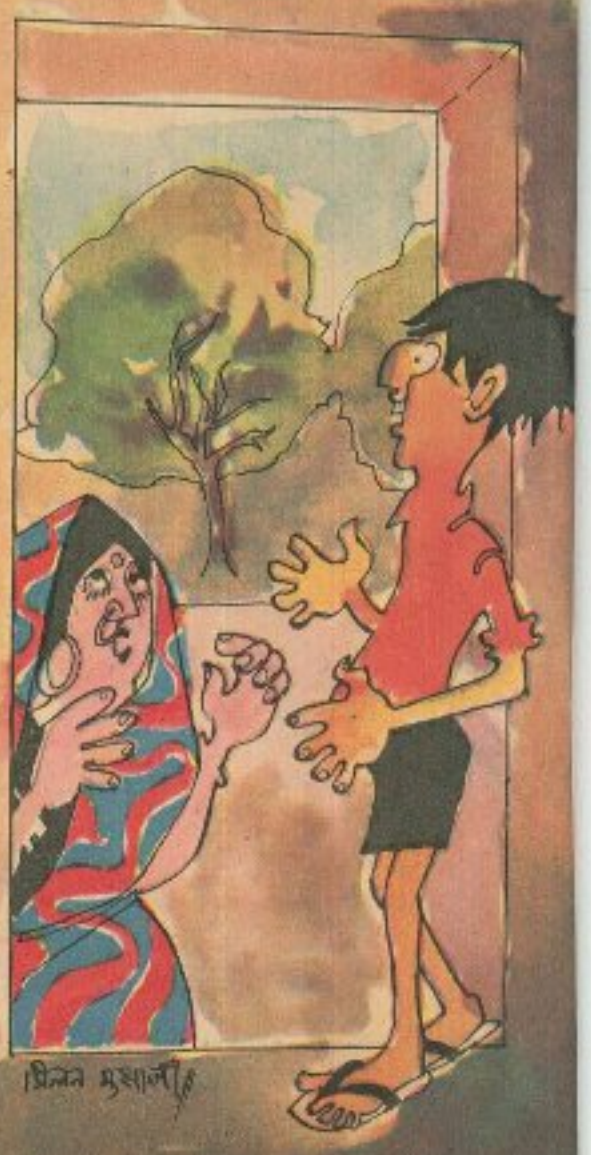

पूछा—"तुझे पता है, भाड़ा कहां कहां बढ़ता है?"

छोकरे ने मुस्करा कर उत्तर दिया—"कडुंआ, मरौली, मेरिडा, नौगांवा, बस्सी, फतहगढ़ साहब; कोई गलती, बादशाओ?"

ड्राइवर बादशाह ने स्वीकार किया—"नहीं, लेकिन..."

"नहीं, तो फिर हांक दो अपनी घोड़ागाड़ी! सब लेट हो रहे हैं..."

बस की घोड़ागाड़ी से तुलना सुनकर यात्री उस परेशानी में भी हंस पड़े. छोकरे ने बुरा मानने के अंदाज में कहा—"वाह, इसमें हंसने की क्या बात है? हमें तो साइंस के मास्टर जी ने यही पढ़ाया है कि बस का इंजन सौ घोड़ों के बराबर होता है!"

पहली बस में चलने वाली अधिकतर सवारियां नियमित होती हैं, इसलिए ड्राइवर की कई जनों से घनिष्टता हो गई थी. दो-तीन बाबू किस्म के लोगों ने कैंस की जिम्मेवारी ली, तो ड्राइवर अपनी 'घोड़ागाड़ी' हांकने को तैयार हो गया.

बस चली. ठीक तरह सवेरा नहीं फूटा था. कंडक्टर ने पिछले गेट पर लगी लाइट जलाने के लिए ड्राइवर से विनय की—"ड्राइवर साहब, जरा पीछे की मोमबत्ती जला दीजिए! यहां अंधेरे का लाभ उठा कर जनता खोटे सिक्के टिका रही है!"

यह वाक्य काफी जोर से कहा गया था ताकि बस के दूसरे कोने पर बैठे ड्राइवर तक पहुंच सके, इसलिए सब यात्रियों ने भी इसे सुना और पूरी बस में हंसी की लहर दौड़ गई.

एक देहाती ने टिकट के पैसे देते हुए कहा—"रोपड़!"

सरहंद से रोपड़ के लिए सीधी बस मिलती है. तुरंत ही एक दर्जन छोटे-बड़े यात्री देहाती पर बरस पड़े, "भले आदमी, रोपड़ जाना है, तो इस बस में क्यों बैठ गया?"

देहाती बौखला गया. 'कंडक्टर' से बोला—"पुत्तर, तू मुझे यहीं उतार दे."

"यहीं कैसे उतार दूं, बापू मेरे! यह लीजड़े

• अरुणकुमार आनंद

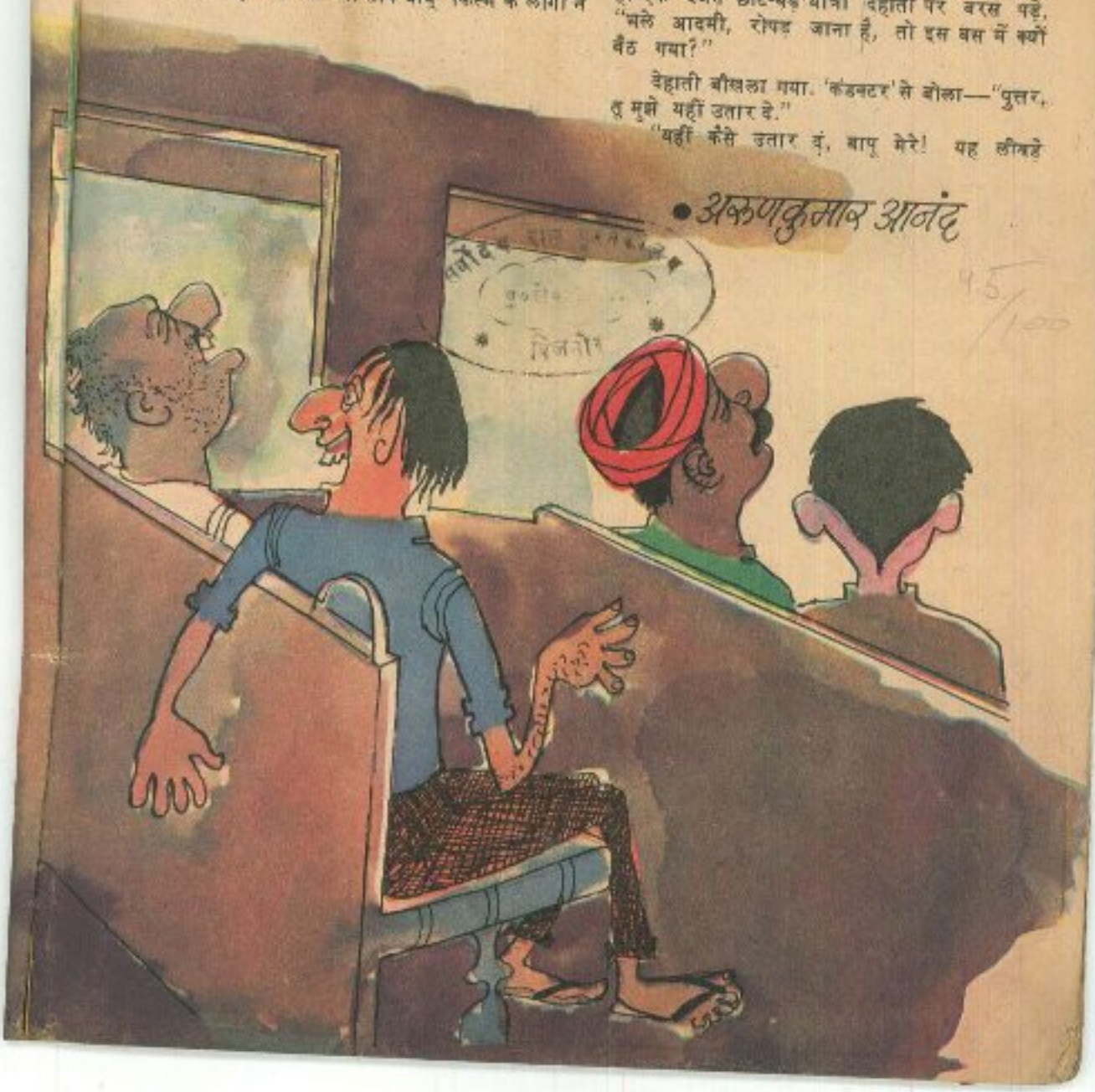

की बस है, कोई सरकारी 'गड्डी' नहीं! कम से कम दस किलोमीटर मैं जरूर साथ ले जाऊंगा!" फिर वह यात्रियों की ओर मुड़कर बोला—"देखा, मुझे कह रहे थे—रो पड़, अब आप ही रोने लगे!"

फिर ठहाका लगा.

लगता था कि देहाती अपने गांव के बाहर कम ही निकला था. बस स्पीड में दौड़ी जा रही थी. वह और भी बौखला गया.

आखिर 'कंडक्टर' ने उसकी घबराहट दूर कर दी—"बापू, मेरिंडे उतर जाना. वहां से दस-बस मिनिट बाद रोपड़ के लिए बसें मिलती हैं."

तभी 'कंडक्टर' के हमउम्र एक लड़के ने दौड़कर बस पकड़ी, तो वह बोला—"यार, तुम तो इस तरह दौड़कर चढ़े जैसे मैं चोरी की बस लिये जा रहा हूं!"

छोकरे का बात कहने का अपना ऐसा विशिष्ट ढंग था कि वह यात्रियों को निरंतर हंसाए चला आ रहा था. वह एकदम लतीफों का पिटारा था. उसके साथ बस में यात्रा करना ऐसा लग रहा था जैसे 'पराग' में 'कहो कैसी रही' पढ़ रहे हों. सबकी यात्रा मजे में कट रही थी. साथ ही छोकरा फुर्ती से यात्रियों से किराया वसूल करके स्वयं सिर ओढ़ी जिम्मेवारी भी कुशलता से निभा रहा था.

सड़क के किनारे खड़ी एक महिला ने बस रुकवा कर पूछा—"पुत्तर, यह बस खरड़ जाएगी?"

ड्राइवर ने खीझकर सिर घुमाया और बोला—"खरड़ से तो यह बस आ रही है, माई!"

कंडक्टर ने अपना तम्र सुझाव दिया—"सड़क के दूसरी ओर खड़ी हो जाइए, अम्मा जी, शाम को वापस लौटूंगा, तो साथ लेता जाऊंगा!"

बस फतहगढ़ से एक किलोमीटर इधर ही थी कि दो-तीन झटके खाकर रुक गई. ऐन किनारे नैया डूबने वाली बात हुई. इंजन में कोई खराबी आ गई थी. ड्राइवर ने इंजन का बोनेट उठा दिया और खराबी दुरुस्त करने में जुट गया. बस के तुरंत ठीक होने का कोई आसार न दीखा, तो एक-एक करके यात्री उतरने लगे, यहां तक कि पूरी बस खाली हो गई.

मैंने 'कंडक्टर' से दोस्ती गांठ ली थी. मैं उतरने लगा, तो वह मुस्करा कर बोला—"चल दिए?"

"हां, क्यों?"

"कुछ देर बैठते, मैं कोका-कोला मंगवाने वाला था!"

उस सुनसान जगह पर कोका-कोला! मैं हंसकर उतर गया.

गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहब की ऊपर वाली बुर्जी ऐन सामने दिख रही थी. मैं सीधा उस ओर बढ़ चला. सहसा मुझे अनुभव हुआ कि मेरी जेब पहले से कुछ हल्की है. मैंने जेब टटोली. बटुआ गायब था. उल्टे पांव मैं बस की ओर दौड़ा.

बस वहीं सड़क के किनारे खड़ी थी, किंतु बस के अंदर का दृश्य बदल गया था. अब न ड्राइवर इंजन पर झुका हुआ था, न 'कंडक्टर' अपनी सीट पर बैठा था. वह रोहतक का हट्टा-कट्टा ड्राइवर छोकरे से रुपयों की पोटली छीनने का प्रयास कर रहा था और छोकरा पोटली को आंखों के बीच दबाकर नीचे बैठ गया था.

प्रति मास नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंक की कहानियां ध्यान से पढ़ो और हमें २० जनवरी १९७१ तक लिखो कि अपनी पसंद के विचार से कौन-कौन-सी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरों पर रखोगे. तुम्हें इस प्रकार उन सभी कहानियों पर अपनी पसंद बतानी है जिनका उल्लेख अलापता में 'सरस कहानियां' के अंतर्गत आया है. जिन बच्चों की पसंद का क्रम बहुमत के क्रम से अधिकतम मेल खाता हुआ निकलेगा, उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कार में भेजेंगे.

बाल पाठकों के द्वारा इस तरह इस अंक की जो कहानी सर्वश्रेष्ठ ठहरेगी, उसके लेखक को भी ५० रुपये का एक अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा. अपनी पसंद एकदम अलग कार्ड पर लिखो. पता यह लिखो :

संपादक 'पराग', हमारी पसंद प्रतियोगिता नं. ४७, पो. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया, बंबई–१.

प्रतियोगिता नं. ४४ का परिणाम

इस प्रतियोगिता में सर्वशुद्ध हल किसी भी बच्चे का नहीं आया. जिन चार बच्चों का हल बहुमत से मेल खाता हुआ (२ अशुद्धियां) आया, उनके नाम और पते नीचे दिए जा रहे हैं; इनको शीघ्र ही पुरस्कार भेजा जाएगा :

- **प्रभात कपूर, बी २०।१७, भेलूपुरा, वाराणसी (उ. प्र.).**
- **अरुणकुमार चतुर्वेदी, द्वारा श्री सुरेशनाथ चतुर्वेदी, भट्टा मुहल्ला, मदन मोहन बीबे वार्ड, कटनी (म. प्र.).**
- **पवनकुमार अग्रवाल, द्वारा श्री हरनारायण लाल, बंगलागढ़, दरभंगा (बिहार).**
- **नसीम अहमद जाकरी, द्वारा श्री मुश्ताक अहमद (ए. सी.) फोर्थ बटालियन, पी. ए. सी. घूमनगंज, इलाहाबाद.**

अक्तूबर अंक की कहानियों का सर्वाधिक लोकप्रिय क्रम इस प्रकार है :

१– सबक, २–स्नेह के स्वर, ३–पुस्तकों को लेकर, ४–सूरज का न्याय, ५–लाइसेंस, ६–बड़ा आदमी, ७–हिसाब-किताब, ८–हिदायतअली.

'सबक' शीर्षक कहानी के लेखक श्री बागीशकुमार सिंह को ५० रुपये का अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान किया जाएगा.

आपस में उनकी खिल्ली उड़ाने लगे. रज्जू कहीं से कोयला उठा लाया और उसने आंटी के घर की दीवार पर लिख दिया—'मकान नंबर ४२०, मिसेज गेंद खाऊ.'

ये लड़के भी कितने साहसी होते हैं! अपने दुश्मनों को तरह-तरह से खिजाते रहते हैं. मैं बड़ी गंभीरता से स्थिति पर विचार कर रही थी. ऐसे तो अगर आंटी गेंद खाती रहीं, तो क्रिकेट नहीं होगी और मेरी बोरियत शुरू हो जाएगी. मैं कितने ध्यान से मैच देखती हूं. उसकी बारीकियों को समझती हूं. उस दिन कन्नू कितनी ही देर से आउट नहीं हो रहा था, तो मैंने रवि को सुझाया था कि वह एक फुल-टॉस गेंद फेंके और स्लिप पर अक्मू को खड़ा कर दे. बस अगली ही गेंद पर अक्मू ने कन्नू को कैच कर लिया.

●

अब लड़कों को करने के लिए कुछ नहीं था. सहसा पप्पी ने कहा, "जामुन का पेड़ जामुनों से लदा है, पर अभी सब पकी नहीं हैं. . . "

"कुछ तो पकी हैं, चलो उन्हें ही गिराएं!" एक बोला.

"और करेंगे ही क्या? गेंद लाने के लिए चंदा तो अब अगले माह ही हो सकता है. . ." अक्मूने कहा.

सबने मैदान से पत्थर बटोरे और फेंकना शुरू किया. एक काली जामुन गिरती, तो पांच हरी. मैं तो खिन्न मन से यह सब देख रही थी, क्योंकि लड़कों के द्वारा फेंके गए सभी पत्थर आंटी के आंगन में गिर रहे थे. बाप रे, अब क्या होगा? आंटी जिस तरह गेंद रख लेती हैं, क्या पत्थर भी रख लेंगी? तभी आंटी जोर से चीखीं—"अरे बदतमीजो, हमें मार डालोगे क्या?"

जब तक आंटी दरवाजा खोलें, लड़के उड़न-छू! मैं सोच रही थी, काश! जामुन का यह पेड़ हमारे घर की तरफ होता, तो मैं सबको यही बोलती—'देखो पत्थर मत फेंको, सब मिलकर इसकी रक्षा करो. जब जामुनें पक जाएंगी, तब अपन एक साथ बैठकर खाएंगे.'

हफ्ते भर से देख रही हूं. रोज यही हो रहा है. लड़के जब-तब पत्थर फेंकते हैं और आंटी बड़बड़ाती हुई अपना सिर पीटती हैं. आंटी का वश चलता, तो वह जामुन का पेड़ उखाड़कर अंदर कमरे में रख लेतीं. पेड़ को कटवा देने की धमकी तो उन्होंने कई बार दी थी. कहती थीं, आंगन में जितनी जामुनें नहीं गिरतीं, उससे कई गुना ज्यादा ढेले गिरते हैं.

एक दिन मैंने देखा, दीवार पर लिखा था—'हमारी गेंदें वापस कर दो, हम ढेले फेंकना बंद कर देंगे.' वाह! तो लड़कों ने इस तरह सौदेबाजी करनी चाही थी. आंटी को शायद सौदा मंजूर नहीं था, वह तो बस चिल्लाना जानती थीं, सोचना नहीं. वह कहती थीं, उनके आंगन में इतने ढेले हो गए हैं कि उन्हें फेंकने के लिए एक मजदूर को पूरा दिन काम करना पड़ेगा, पर मजदूरी कौन देगा? इन दुष्ट लड़कों के बाप. . ?

बाप रे बाप! मैं तो वाकई घबरा गई, जब देखा कि आंटी और एक मजदूर वाकई जामुन के पेड़ के पास खड़े थे. और उस मजदूर के हाथ में कुल्हाड़ी थी. आंटी उससे कह रही थीं—"हां, एकदम नीचे से काट दो. . ."

मुझसे रहा न गया. मैं दौड़ी-दौड़ी उधर गई.

"आंटी, इस पेड़ को मत कटवाइए!"

"चल, यह सब तुम्हारे रवि की करतूत है."

"आंटी, देखिए न, इस पर अभी भी कुछ पकी जामुनें लगी हैं."

"तो क्या हुआ? सौ लगी होंगी, तो दो सौ ढेले बरस पड़ेंगे."

लड़के भी अब आकर इर्द-गिर्द खड़े हो गए थे. पेड़ का कत्ल होने जा रहा था, इसलिए वे भी उदास थे.

"आंटी, आप इस मजदूर को कितना पैसा देंगी?"

"दिन भर का तीन रुपये."

"आप चाहें तो ये रुपये बचा सकती हैं."

"कैसे?"

"आंटी, आप लड़कों की गेंदें लौटा दीजिए."

"चल हट, बड़ी आई. . .गेंद दे दूं, तो फिर खेलेंगे ये मुए और फिर हमारे आंगन में टपकेंगी वे. . ."

"अब नहीं टपकेंगी," मैंने कहा.

"क्यों, कैसे नहीं टपकेंगी?" न केवल आंटी बल्कि लड़कों ने भी पूछा.

"ऐसा करो, रवि, तुम लोग अपने स्टंप इधर की तरफ गाड़ा करो और बॉलिंग उधर से किया करो... इससे होगा यह, कि आंटी के आंगन की दीवार विकेट-कीपर बन जाएगी, इससे तुम्हें एक फील्डर भी मिल जाएगा और शाट लगने पर गेंद मैदान में जाएगी, आंटी के यहां नहीं."

"अरे, यह तो हमने सोचा ही नहीं था," रवि के मुंह से निकला.

वैसे आंटी को अक्सर कोई बात समझ नहीं आती, पर न जाने यह बात कैसे समझ में आ गई. राजीनामा हो गया और लड़कों को गेंदें वापस मिल गईं. तभी आंटी ने पूछा, "और इन ढेलों का क्या होगा?"

"उसका भी समाधान हो जाएगा, आंटी," अपना रोब जमाते हुए मैंने कहा—"आप सब लड़कों को अंदर आंगन में बुला लीजिए और उनसे कहिए कि वे जामुनों पर पत्थर फेंकें. इससे मालूम है, आंटी, क्या होगा? यही कि आप के आंगन के ढेले उड़-उड़कर इस तरफ मैदान में आ जाएंगे और जामुनें भी गिर जाएंगी. फिर झगड़ा खतम."

सबने वैसा ही किया, जैसा मैंने कहा था. जामुनें इकट्ठी की गईं. थोड़ी आंटी ने भी खाईं.

बताइए, मैं हूं न बुद्धिमान? मैंने चुटकियों में मामला निपटा दिया. बड़े मंत्री या नेता वगैरा भी इतना नहीं कर पाते, किंतु दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि उन बदतमीज लड़कों ने मुझे फिर भी क्रिकेट नहीं खिलाई. ●

२०।२ अमीरगंज, भोपाल (म. प्र.)

अरुण ने अलमारी में से इतिहास की किताब निकाली और अपने कमरे में आकर पलंग पर बैठकर पढ़ने लगा—"भारतवर्ष को सोने की चिड़िया कहा जाता है. यहां घी-दूध की नदियां. . . ."

पढ़ने बैठा ही था कि दूध का भरा गिलास लेकर मम्मी कमरे में आ गई. गिलास को मेज पर रखकर बोलीं, "अरुण, ले पहले दूध पी ले, बाद में पढ़ना; नहीं तो दूध

कहानी

सोने की चिड़िया

kissekahani.com

ठंडा हो जाएगा."

अरुण ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा, "ऊंहू! मन नहीं कर रहा दूध पीने को."

"मन करे या न करे, दूध पीना ही पड़ेगा." मम्मी ने मीठी-सी झिड़की दी.

"अच्छा, अभी नहीं, शाम को जरूर पी लूंगा. दोपहर को तो सचमुच मन नहीं करता."

"नहीं-नहीं. जिद मत करो. चुपचाप दूध पी लो. शाम की शाम को देखी जाएगी."

'अच्छा जैसे-तैसे पी लूंगा,' वाली मुद्रा बना कर अरुण ने पूछा, "ब्योर दूध ही है न? इसमें कुछ डाल तो नहीं रखा?"

"नहीं नहीं, तुम तो बस पीने की बात करो. कुछ नहीं डाल रखा इसमें. मैं अपने सामने पिलाकर जाऊंगी तुम्हें!"

अरुण ने डरते-डरते दूध के गिलास में झांका. चिढ़ता हुआ बोला, "फिर वही! इसमें अंडा और बादाम घोटकर क्यों डाल दिए? मेरा तो खालिस दूध पीने को ही मन नहीं करता और आपने इसमें यह 'गड़बड़' और मिला दी. इसे पीने से जी नहीं घबराएगा क्या? 'मैं तो नहीं पी सकता इसे."

"पी ले, अरुण, पी ले! बिना पिए कैसे चलेगा? पढ़ने वाले बच्चों के लिए दूध बहुत जरूरी होता है. और फिर तेरी परीक्षाएं भी तो हैं सिर पर. पी जा गटागट . . . ."

"पढ़ने वाला बच्चा तो विनय भी है. परीक्षाएं उसके भी सिर पर हैं. उसे तो दो वक्त रोटी भी. . ."

"फिर वही र
"तुम्हें मिलता है
हैं. और लोग तो
बच्चों को दूध क
को दूध नसीब हो
पोस्ट पर हैं तो तुम
की तरह तुम्हें भी
और आंखों को अ
दूध मिलता नहीं
पांव जोड़ने पड़ते हैं

यह कहकर म
कमरे से बाहर आने
रोककर खड़ा हो ग
लेकर बोला, "मम
सारा दूध पी जात
कह दीजिए कि आ
मुझे क्षमा कर दिय
को उत्पात. . . .'
पी जाता हूं. यह दे

और अरुण
गिलास मम्मी के
खाली गिलास, अब
हाथ जोड़ता हूं,
हूं. . . ." और अ
जैसे मास्टर लोग

"बस-बस, रह
हंसते हुए कहा, औ
में चली गई.

दूध पीकर अ
बची निकाल कर
बैठ गया. पर उस
सामने किताब रखी
कल की घटना की

कल वह इसी
वजह से पलंग के

"फिर वही राग छेड़ दिया?" मम्मी ने क्रोध से कहा. "तुम्हें मिलता है न, तभी ज्यादा बातें बनानी आती हैं. और लोग तो तरस जाते हैं दूध को. चंद्रा आंटी के बच्चों को दूध का स्वाद तक भूल गया है. हर किसी को दूध नसीब होता है क्या? आज तेरे पापा अच्छी पोस्ट पर हैं तो तुम्हें भी दूध मिल रहा है. नहीं तो विनय की तरह तुम्हें भी. . .तुम्हें भी. . ." मम्मी फफक पड़ीं और आंखों को आंचल से पोंछने लगीं. "लोगों को तो दूध मिलता नहीं और यहां दूध पिलाने के लिए हाथ-पांव जोड़ने पड़ते हैं!"

यह कहकर मम्मी ने दूध का गिलास उठाया और कमरे से बाहर आने लगीं. अरुण फुर्ती से उठा और रास्ता रोककर खड़ा हो गया. मम्मी के हाथ से दूध का गिलास लेकर बोला, "मम्मी, प्लीज मुझे माफ कर दो. मैं सारा दूध पी जाता हूं. आप चुप हो जाइए और एक बार कह दीजिए कि आप मुझ से नाराज नहीं हैं और आपने मुझे क्षमा कर दिया है. 'छिमा बड़ेन को चाहिए छोटन को उत्पात. . . .' और दूध का क्या है, वह तो मैं अभी पी जाता हूं. यह देखो. . .एक दो, तीन. . ."

और अरुण गटागट सारा दूध पी गया. खाली गिलास मम्मी के हाथ में थमाता हुआ बोला, "यह लो खाली गिलास, अब मैं कभी दूध को मना नहीं करूंगा. हाथ जोड़ता हूं, कान पकड़ता हूं, मुर्गा बन जाता हूं. . . ." और अरुण हंसते हुए सचमुच मुर्गा बन गया, जैसे मास्टर लोग लड़कों को बनाया करते हैं.

"बस-बस, रहने दे. चापलूस कहीं का!" मम्मी ने हंसते हुए कहा, और उसकी पीठ पर धप् लगाकर रसोई में चली गई.

दूध पीकर अरुण ने अपने बस्ते में से छोटी इलायची निकाल कर मुंह में डाल ली और फिर पढ़ने बैठ गया. पर उसका पढ़ने को मन नहीं कर रहा था. सामने किताब रखी हुई थी और दिमाग चला गया था कल की घटना की तरफ. . . .

कल वह इसी जगह बैठकर पढ़ रहा था. तेज हवा की वजह से पलंग के सिरहाने वाली खिड़की बंद की हुई थी, उसे पढ़ते हुए अभी कुछ ही देर हुई थी कि पहले खिड़की के शीशे पर ठक-ठक की आवाज सुनाई दी और फिर विनय की फुसफुसाहट हुई; वही जानी पहचानी आवाज—"अरुण, हिज-हाइनेस श्री विनयकुमार जी पधारें हैं, द्वार खोल दिए जाएं!"

अरुण ने उठकर दरवाजा खोल दिया. विनय के चेहरे पर हमेशा की तरह मुस्कराहट तैर रही थी. विनय को कोई भी दुःख हो, कोई उसे कुछ भी कह दे, वह हमेशा मुस्कराता रहता है. हर प्रश्न का उत्तर अपनी मीठी मुस्कान से देता है.

विनय गरीब जरूर है, पर है बहुत सभ्य. उसका बातचीत करने का ढंग इतना प्यारा है कि वह पहली ही नजर में सब का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है. तभी तो वह अरुण का इतना पक्का दोस्त बन गया है.

प्रदीपकुमार

"हलो!" अरुण ने विनय से हाथ मिलाया और मुस्कराते हुए कहा, "हिज हाइनेस का स्वागत है!"

विनय हंस दिया.

अरुण ने उसे पलंग पर लाकर बिठाया. इतिहास की खुली किताब देखकर विनय ने चौंकने का अभिनय किया और मुस्कराते हुए अरुण से पूछा, "अरुण भाई, क्या इरादा है इस बार?"

"कुछ भी तो नहीं. और फिर हमारे काहे के इरादे. इरादे तो तुम जैसे महारथियों के होते हैं!"

"अरे चल, रहने दे. क्यों चला रहा है मुझे. असली महारथी तो तुम हो. अभी से घोटा लगाना शुरू कर दिया है."

"इतिहास का तो घोटा लगाना ही पड़ता है. और पहला पेपर इतिहास का ही है. अकबर, बाबर सब के किस्से लिखने पड़ेंगे. इतिहास विषय ही ऐसा है, बिना

घोटा लगाए काम ही नहीं चलता. बार-बार भूल जाते हैं कि बाबर और हुमायूं में कौन किसका बेटा था."

दोनों हंस देते हैं.

"कितने पाठ बचे इतिहास के?" विनय ने पूछा.

"पढ़ तो सब लिये. रट्टा अभी पांच-छह का लगाना बाकी है." अरुण ने कहा, "और तुमने तो दस-बीस बार रिवीजन भी कर लिया होगा?"

"दस-बीस बार नहीं, सौ दो सौ बार! अभी तो सिर्फ एक बार ही पढ़ा है. वह कमबख्त चौथा पाठ याद नहीं होने में आ रहा."

"चौथा कौन-सा?"

"अरे वही, भारतवर्ष को सोने की चिड़िया क्यों कहा जाता है?"

"क्या? वह पाठ याद नहीं होता? वह तो सबसे आसान पाठ है. मुझे तो चुटकियों में याद हो गया था. तू गप्प तो नहीं मार रहा?"

"नहीं-नहीं, मुझे सचमुच ही वह पाठ याद नहीं हो पाता. बार-बार याद करने की कोशिश करता हूं, पर पढ़ते-पढ़ते न जाने क्या हो जाता है कि किताब के अक्षर धुंधले होकर इधर-उधर भागने लगते हैं. मन कहीं और चला जाता है. लगता है सोने की चिड़िया तड़प रही है, क्योंकि उसके पंख कट चुके हैं. जिस देश के बच्चों को अकाल देखने और सहने पड़ते हैं, हाथ में कटोरा पकड़कर भीख मांगनी पड़ती है, दूध तो कोसों दूर सूखी रोटी भी जिन्हें नहीं मिलती, उन निर्दोष बच्चों के देश को सोने की चिड़िया कहकर कब तक अपने आपको भुलावे में रखा जा सकता है? सोने की चिड़िया तो अब उन्हीं लोगों के लिए है जो आरामदेह गद्दों पर लेटते-लेटते थक गए हैं..."

"ओह! विनय यार! तू तो सीरियस हो गया. तुझे तो कवि होना चाहिए था. बात तो इतिहास के पाठों की चल रही थी और तू उसे कहां ले गया? लगता है देश की सब समस्याओं-चिंताओं का बोझ तुम अकेले पर आ पड़ा है!

"माइ डियर विनय, भारतवर्ष को सोने की चिड़िया आजकल नहीं कहा जाता; उन दिनों कहा जाता था जब शाहजहां जैसे बादशाह अपने सिंहासन में करोड़ों रुपये के हीरे-जवाहरात जड़वाते थे. उनके महलों की दीवारों पर हीरे ही हीरे नजर आते थे. मुगलों के गुप्त खजाने में कितना सोना-चांदी भरा था इसका आज तक कोई भी अनुमान नहीं लगा पाया है. अब न वह समय रहा है, न सोने की चिड़िया...दरअसल किताब में प्रश्न यूं होना चाहिए था—भारतवर्ष को सोने की चिड़िया क्यों कहा जाता था?"

"किताब में लंबे-चौड़े लेख प्रस्तुत करके हमें गलतफहमी में डालने की कोशिश की गई है..."

"शायद. खैर, छोड़ो, अब हमें क्या फायदा इन बातों से? पुराने वैभव को याद करके हम अपना जी क्यों खराब करें? हमें तो इतिहास का परचा देने से मतलब है. इस प्रश्न को याद करो. परचे में आए तो लिख डालो. दैट'स आल!" कुछ देर दोनों चुप रहे.

"अच्छा, मैं अब चलता हूं," विनय जाने के लिए उठ खड़ा हुआ.

"कैसे चलते हो! अभी नहीं जाना है. ठहरकर चले जाना. अभी तो आए हो और अभी चल दिए. बैठो!" अरुण ने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा और विनय की बांह पकड़ कर उसे बैठा दिया.

"नहीं, भई, चलें. काफी देर हो गई है."

"कोई देर-वेर नहीं हुई है. आराम से बैठा रह. ज्यादा चूं-चपड़ मत कर. मैं अभी आता हूं," कहकर अरुण कमरे से बाहर आ गया.

●

कुछ देर बाद अरुण कमरे में आया, तो उसके हाथ में दूध का भरा गिलास था. विनय के सामने मेज पर दूध का गिलास रखते हुए उसने कहा, "ले, विनय, दूध पी ले."

"क्या? ...दूध?" विनय को जैसे बिच्छू ने काट खाया हो.

"हां-हां, दूध. तू ऐसे चौंक क्यों रहा है?"

"मैं दूध नहीं पिऊंगा. मैं घर जा रहा हूं." वह उठ खड़ा हुआ.

"फिर वही बदतमीजी! कैसे जा रहा है तू घर? मैं जाने दूंगा तब न! पहले चुपचाप दूध पी ले, फिर घर भी चले जाना. यहां बैठ जा आराम से." अरुण ने फिर उसे बिठा दिया.

"नहीं, अरुण, प्लीज! मुझे दूध के लिए मत कहो. मैं किसी भी हालत में दूध नहीं पी सकता. मुझे घर जाने दो." कहकर विनय उठ खड़ा हुआ. पर अरुण ने उसे फिर बैठा दिया.

"क्यों नहीं पी सकता? जहर मिला हुआ है क्या इस दूध में?"

विनय चुप.

"बोल? बोल न?"

अचानक विनय खड़ा होकर क्रोध से चिल्ला पड़ा, "हां! इस दूध में जहर मिला हुआ है! मुझे गरीब समझकर तुम मुझपर दया कर रहे हो न. दया के दूध में सचमुच जहर होता है! दया मैं किसी की भी नहीं चाहता, भगवान की भी नहीं..."

अरुण कांप-सा गया. विनय के चेहरे पर तैरने वाली मुस्कराहट का यूं क्रोध में बदलना आज उसने पहली बार देखा था. विनय तेजी से कमरे से बाहर निकल गया. अरुण को उसे बढ़कर रोकने का साहस नहीं हुआ.

दूध को मिट्टी के बर्तन में डालकर उसने अपनी पालतू बिल्ली रोजी के सामने रख दिया. 'लप्-लप्' करती बिल्ली सारा दूध पी गई.

खन्...खन्न...खन्नाक...!

अलमारी में से किसी चीज के नीचे फर्श पर गिरकर टूटने की आवाज ने अरुण को चौंका दिया. वह हड़बड़ा गया. उसकी विचारधारा भंग हो गई. उसने देखा चूहे

को पकड़ने की फिराक
हाथियों को गिराकर
बाहर निकल गई है
अरुण गुस्से से
बिल्ली को डंडा फें
उसने पूरी ताकत से
मारा. इस बार भी
की छत पर जाकर
अरुण रसोई में
कई बार कहा है
से उड़वा दो. अब त
चुकी है, पर पापा है
इतना प्यार क्यों है
यह बिल्ली मेरे हल्
करके रख देगा. रा
चिड़िया को मुंह में
पर. कभी देखा है
और खून से सने चिड़
"अच्छा, तू बैठ
को कहीं भिजवा देंगे.
हांफता हुआ अरु
ही नहीं किया. किता
को अलमारी में पट
लेट गया. न जाने क

●

अरुण सोकर उ
उसका सारा शरीर
हुआ था. उसके सिर में
करवट बदली, तो मेज
उसने चिट उठाई. मम्
यहां आ रही हूं. तू उ
पापा के आने से पहले ह
हो, तो किसी के हाथ
उसने अच्छी तरह
बंद करके वैसे ही लेटा
कर, चाय पीकर फिर से
चाय बनाने की हिम्मत
तभी कमरे के द
हड़बड़ा गया. कौन-सी
कर दरवाजा खोलना
भी वैसे ही लेटा रहना
झख मारकर चला ज
हुई, कि कोई उसके द
वह सुनते हुए भी लेट
और अगर कोई घर का
नहीं खोलूं' करते हुए
घबराहट हुई. उसने उ
"ओह, विनय!"
(कृपया

kissekahani.com

लंबू, कल का खाना तो मेरी नज़रों में घूम रहा है!
यही हाल अपना भी है, प्यारे!
इन्हीं स्वाद भरी बातों में सुबह के चार बज गए...
नींद आ रही है पर...
गुलाबजामुन
गणतंत्र दिवस को जब सूरज निकल रहा था, और तिरंगा लहराया जा रहा था, तब छोटू-लंबू नींद ले रहे थे.
नींद बड़ी गहरी थी और उन्हें सपने में भी खाने की चीजें ही दिख रही थीं!
और फिर
अरे भई, तुम लोग कहां मर गए!
कौन नींद खराब कर रहा है — सुबह हमें दावत में जाना है!
हाय, गणतंत्र दिवस भी गया, दावत भी गई! आज २६ जनवरी तो है, लेकिन इस समय रात के दस बजे हैं!
मर गए!

म
रह

राजस्थान के
कोई मशहू
होने तथा वहां
लोकप्रियता अच
ऐसी घटी कि
इसी का नाम र
के बाहर खुली
उस पर एक मूर्ति
इसी जगह काय
करते हैं. मूर्ति
देखकर पुराने यु
एक विचित्र बात
डाल रखा है. मू

मकराना अ
वह प्राणी अ

मकराना रा
सफेद संगमरमर
एक गांव है जहां
इसके अतिरिक्त
परंतु उसका रंग

मूर्ति पर लि
ने मकराना तथा
के सिर काट कर
प्राप्ति न हुई. कि
मुर्गे की तथा कि
की भी अभिलाष
राय दी कि माया
की भी बलि चढ़ा
वहां लालची लोगों
में आया कि कुछ
और सांभर के
फिर भी नतीजा
ध्यान इस ओर से
इबारत को कइयों

लूनी के पास

kissekahani.com

एक रहस्य कथा

मूर्ति का रहस्य

—अब्दुल गफ्फार छीपा

राजस्थान के जोधपुर जिले में एक गांव है लूनी. कोई मशहूर गांव तो नहीं है, लेकिन रेलवे जंक्शन होने तथा वहां की मिठाई मशहूर होने के कारण गांव को लोकप्रियता अच्छी मिली है. इसके अतिरिक्त एक घटना ऐसी घटी कि राजस्थान के हर बच्चे की जुबान पर इसी का नाम रह गया. गांव बड़ा खुशहाल है. इसी गांव के बाहर खुली जगह में एक चबूतरा बना हुआ है. उस पर एक मूर्ति बनी हुई है. यह मूर्ति हजारों बरसों से इसी जगह कायम है. लोग श्रद्धास्वरूप इस मूर्ति की पूजा करते हैं. मूर्ति बड़ी ही आकर्षक है. इसकी कला को देखकर पुराने युग की याद ताजा हो जाती है. इस मूर्ति में एक विचित्र बात है जिसने काफी लोगों को उलझन में डाल रखा है. मूर्ति के विशाल सीने पर लिखा है :

मकराना और सांभर के बीच सिर काटे,
वह प्राणी अपार धन पावे.

मकराना राजस्थान का एक प्रसिद्ध गांव है, जहां का सफेद संगमरमर सारे भारत में प्रसिद्ध है तथा सांभर भी एक गांव है जहां का नमक सारे भारत में भेजा जाता है. इसके अतिरिक्त सांभर में भी संगमरमर निकलता है, परंतु उसका रंग काला होता है.

मूर्ति पर लिखे वाक्य के अनुसार कितने ही लोगों ने मकराना तथा सांभर के बीच के स्थान पर जानवरों के सिर काट कर बलि दी, परंतु किसी को भी धन की प्राप्ति न हुई. किसी ने बकरे की बलि चढ़ाई, किसी ने मुर्गे की तथा किसी ने अन्य जानवर की, परंतु किसी की भी अभिलाषा पूरी न हुई. कुछ बूढ़े लोगों ने राय दी कि माया हासिल करने के लिए अपनी औलाद की भी बलि चढ़ाई जाती है. जहां अच्छे लोग बसते हैं वहां लालची लोगों की भी कमी नहीं होती. ऐसा सुनने में आया कि कुछ लोगों ने अपने बच्चों को भी मकराना और सांभर के बीच ले जाकर बलिदान कर दिया. फिर भी नतीजा कुछ न निकला. धीरे धीरे लोगों का ध्यान इस ओर से कम होता गया. मूर्ति पर लिखी इबारत को कइयों ने दिमाग से भुला दिया.

लूनी के पास एक छोटा-सा गांव है. नाम तो मालूम नहीं, पर वहां एक गरीब किसान रहता था. पत्नी व एक नौ-दस साल का लड़का, ये ही प्राणी थे परिवार में. उस किसान की पत्नी को एक दिन किसी सांप ने डस लिया. किसान ने भरसक प्रयत्न किए अपनी पत्नी को बचाने के लिए, लेकिन वह न बच सकी. इधर उसकी पत्नी मरी उधर दूसरे ही दिन उसकी झोंपड़ी में आग लग गई, जिससे उसका सब कुछ स्वाहा हो गया. किसान ने अपने बेटे से कहा कि पड़ोस से ऊंट मांग ला. घर में जो भी था सब जल चुका है. कल से लोग तेरी मां का शोक प्रकट करने के लिए आएंगे, उनके खाने-पीनेका प्रबंध तो करना ही पड़ेगा. दूसरे गांव जा कर साहूकार से कुछ कर्ज ले आएं.

लड़का गया और ऊंट ले कर आ गया. सायंकाल होते ही दोनों बाप-बेटे वहां से रवाना हो गए. रात पड़ते ही वह उस मूर्ति के पास पहुंच गए. किसान ने अपने पुत्र से कहा—"यहां पर ठहर जा. मैं गांव जाकर कर्ज लेकर सामान ले आता हूं. सरदी हो चली है. कुछ सूखे पत्ते और लकड़ियां चुन लेना और आग जला लेना."

इतना कहकर किसान गांव के अंदर दाखिल हो गया. लड़के ने आग जला ली तथा सरदी से बचने के लिए हाथ तापता रहा. अचानक उसकी नजर मूर्ति की ओर उठी. उसे मूर्ति के सीने पर कुछ लिखा हुआ दिखाई दिया. एक बड़ी जलती हुई लकड़ी लेकर वह मूर्ति के समीप पहुंचा. लड़का थोड़ी-बहुत हिंदी जानता था. अटकते अटकते वह पढ़ने लगा. कुछ समय पश्चात् उसका बाप भी सामान आदि लेकर गांव से लौट आया. लड़के ने बाप से कहा—"पिता जी, वह जो सामने मूर्ति है उस पर कुछ लिखा हुआ है."

किसान ने कहा—"क्या लिखा है, पढ़कर सुना."

लड़के ने अटकते हुए पढ़ना शुरू किया—'म-क-रा-ना और सां-भ-र के बी-च सिर का-टे वह प्रा णी अपार ध-न-पा-वे.' किसान ने उसे फिर पढ़ने को कहा. और लड़के ने छह-सात बार पढ़कर बाप को सुनाया. किसान ने गौर से मूर्ति की ओर देखा और एक टक देखता रहा.

अचानक किसान के मुख पर मुस्कान खेलने लगी. उसका अनपढ़ दिमाग और उसकी सहज बुद्धि काम करने लगे तेजी से. और वह चिल्ला उठा—"मैंने इसका भेद पा लिया है, मैंने भेद पा लिया है! बेटा, देख क्या रहा है? जरा मेरी कुल्हाड़ी लाना. जो कुछ है इसी मूर्ति में है. सफेद पत्थर मकराना का और काला सांभर का. इसी के बीच में कुछ है!"

बस फिर क्या था, दोनों ने मिलकर उसी समय मूर्ति का सिर और धड़ अलग किया. सिर के अलग होते ही सोने की अशर्फियां चबूतरे पर बिखर गईं.

किसान ने तुरंत आग बुझा दी और रात के अंधेरे में बाप-बेटे जितना धन ले जा सके ले गए और मूर्ति का रहस्य हमेशा के लिए समाप्त हो गया. ●

हारून कटपीस स्टोर, प्रथम बी मार्ग,
सरदारपुरा, जोधपुर.

कहानी

स्वेटर के फंदे

kissekahani.com

जिस बात से मां जी डर रही थीं, वही हुई. बाबू जी दो-चार कौर खाकर ऐसे ही उठ गए. जब खाने बैठे थे, तो ऐसा नहीं लगता था कि भूख बिलकुल है ही नहीं. मां जबसे दोनों दूकानें दंगाइयों ने जला दीं, उनकी क्या, घर में सभी की भूख-प्यास-नींद उड़ गई थी. पर रोया भी कहां तक जाए, आंसू भी तो इतना साथ नहीं देते. हां, मां जी को मालूम है कि बाबू जी के नयनों ने कभी खारा जल नहीं बहाया, पर उनकी छाती से उठती वे हृदय भेदतीं गहरी निश्वासें, मां जी ही जानती थीं कि वह रो रहे हैं . . .ऐसे कि रो-रो कर उनका हृदय छलनी हुआ जा रहा है.

"ऐसे गुमसुम होकर बैठोगे, तो कैसे चलेगा? आखिर इन बच्चों की तरफ देखो न. अपनी खातिर नहीं, इन्हीं की खातिर सही, कुछ हंसो-बोलो तो. तुम्हारी वजह से ये बच्चे भी सहमे-सहमे-से रहते हैं." वह कहतीं.

पर बाबू जी बिना कुछ कहे सिर झुका लेते. फिर धीरे-धीरे वह हंसने-बोलने भी लगे. बच्चे जब घर में आ जाते, वह उनसे दो-चार बातें कर खुश हो लेते; थाली सामने आ जाती, तो पेट भर के खा लेते. पर आज मां जी सुबह से ही डर रही थीं कि छोटी बहू के नौकरी कर लेने की बात सुनकर खाना न खा सकेंगे. उन्होंने बहुतेरा कहा—"जा अपने ससुर से आज्ञा तो ले ले कि नौकरी करूं या नहीं . . ." पर वह अड़ियल टट्टू की तरह अड़ी ही रही. बोली—"बाबूजी के पास जाने का, उनकी आज्ञा लेने का मेरा साहस नहीं है, मां जी. वह कभी 'हां' नहीं करेंगे, और मैं उनकी 'ना' सुनकर फिर हमेशा के लिए बंध जाऊंगी . . . ना, मां जी, उनकी आज्ञा लेने की बात न कहिए. बस आप आज्ञा दे दीजिए. मेरे लिए वही बहुत है."

मां जी की आंखों में आंसू भर आए. आंखें पोंछते-पोंछते वह बोलीं—"जा, तू अपनी जिद की पक्की है. मैं क्या कह सकती हूं? कुछ कहने को रहा ही कहां है? अब तो यह घर-गृहस्थी सब तुम दोनों के सहारे है." और पांव छूती बहू के सिर पर हाथ फेरती मां जी के हृदय से न जाने कितने आशिष फूट रहे थे.

और छोटी बहू—उल्लास में भरी छोटी बहू—दो-दो तीन-तीन सीढ़ियां कूदती चली गई, जैसे छोटी बच्ची हो.

छोटी बहू के बजाय मां जी को खाना परोसते देख, अनायास ही बाबू जी पूछ बैठे—"आज छोटी बहू कहां है?"

कितनी बातें आईं मन में—कह दें तबियत खराब है या सहेली के घर गई है या मैके चली गई. पर उनके मुख से निकला—"छोटी बहू को कालेज में नौकरी मिल गई है . . ." फिर जैसे छोटी बहू की रक्षा कवच बनते बोलीं—"उसने तो बहुत दिन पहले ही मुझसे कहा था

कि तुमसे आज्ञ
और फिर जैसे
चली गई.

बाबूजी
उठ गए.

खाना मां
छोटी बहू को
देखा, वही आ
बनी है. जिस
सदा उपेक्षा
सहारा बना है.
'पढ़ेगा . . .हजा
करना, समय
अपनी दूकान
लल्लू जी, तुम
रुपया बरबाद
मुनीम कमा लेता
की परिभाषा
थी, जो जितना
ज्ञान-पिपासु की

यूनिवर्सिटी
थियों के साथ
की भूख मिटाने

कि तुमसे आज्ञा ले लूं, पर मुझे ही याद नहीं रहा..." और फिर जैसे कुछ भूल गई हों, ऐसे ही तेजी से उठकर चली गई.

बाबूजी ने किसी तरह दो-चार कौर निगले और उठ गए.

खाना मां जी से भी कहां खाया गया! जिस छोटी बहू को उन्होंने कभी इज्जत की नजर से नहीं देखा, वही आज घर की टूटी जर्जर नौका की खिवैया बनी है. जिस छोटे लड़के राजकिशोर को घर में सदा उपेक्षा मिली, वही आज इस घर का सबसे बड़ा सहारा बना है. कितना तिरस्कार करते थे बाबू जी— 'पढ़ेगा . . .हजारों रुपया बर्बाद करेगा . . . दिमाग खाली करना, समय बरबाद करना, बस. . .! इतनी मेहनत अपनी दूकान पर करता, तो आदमी बन जाता. लल्लू जी, तुम जितना पढ़-लिखकर, इतना समय और रुपया बरबाद करके कमा रहे हो, उतना तो हमारा मुनीम कमा लेता है!' पर राजकिशोर के मन में आदमी की परिभाषा कुछ और थी. एक मानसिक भूख थी, जो जितना निगलती उतना बढ़ती ही जाती थी. ज्ञान-पिपासु की प्यास क्या रुपये से मिटती है?

यूनिवर्सिटी का रीडर राजकिशोर अपने विद्यार्थियों के साथ कितना परिश्रम करता, अपनी स्वयं की भूख मिटाने को कितना अध्ययन करता, इसका कोई अंत न था. रुपये कितने मिलते? कुल आठ सौ— दोनों दूकानों से खिंच कर आती अथाह संपदा के मुकाबले सागर में बूंद समान! वे आठ सौ रुपये मां जी अपनी सेफ में ऐसे डाल देतीं जैसे दो-चार नये पैसे डाल दिए हों. फिर राजकिशोर ने सबका विरोध करके केवल पढ़ा ही नहीं था वरन अपनी पसंद से एम. ए. पास लड़की से शादी भी की—न रुपया, न दहेज. जो आज तक खानदान में कभी नहीं हुआ था, वह राजकिशोर ने किया.

— शीला डेहरे —

शाम को बाबू जी ने छोटी बहू को बुलाया. घबड़ाती-सहमती करुणा सामने पहुंची, तो बाबू जी का गला भर्रा रहा था. लगा, जो कुछ बोलना चाहते हैं कह नहीं पाएंगे. कुछ ठहर कर बोले—"बेटी, जिसको हीरा समझा था वह पत्थर निकला और जो टूटे कांच की तरह करकती थी, सो तू हीरा निकली! . . .बड़ी बहू, जो इतने मान-सम्मान से घर में आई थी, इस दुःख के समय हमें छोड़कर मायके चली गई, क्योंकि वहां ऐशोआराम की कमी हो गई थी. और तू . . . तू अगर मुझ से पूछती भी, तो मैं मना नहीं करता,

मना कर ही न पाता . . . भगवान तुम्हें सुखी रखे . . ." इससे आगे उनसे कुछ भी कहते न बना.

आंसू पोंछती करुणा चुपचाप वहां से चली आई.

बड़ी बहू रत्ना मायके चली गई, पर चाह कर भी अपने बड़े दोनों बच्चों को साथ न ले जा पाई. रीता नवीं में पढ़ रही थी और दीपक आठवीं में. बस चार वर्ष की माला उसके साथ गई. बाबू जी सब देखते रह गए थे. यही रत्ना बिना सास-ससुर की आज्ञा के नीचे से ऊपर भी न जाती थी, वही बिना कहे मायके चली गई. जब तक दौलत थी, रत्ना ने हर बात को सिर-आंखों रखा. आज बाबू जी को लग रहा था कि वह आज्ञा सास-ससुर की नहीं, धन-दौलत की मानती थी.

•

मां जी दूध लेकर आईं, तो बाबूजी ने उनकी ओर करवट बदल कर पूछा—"दीनानाथ जी के यहां सवा दो हजार का सामान गया था, रुपये अभी तक नहीं भेजे. श्यामकिशोर से कहा था . . ."

लगा दूध का गिलास मां जी के हाथ से छूट पड़ेगा. कांपती-सी आवाज में बोलीं—"तुम दूध पियो, मैं श्याम से पूछूंगी."

"पूछूंगी क्या, महीना भर तो हो गया तुम्हें पूछते. उसे हो क्या गया है? रुपया लाता क्यों नहीं? क्या वह मना करते हैं देने को? श्याम से कहो उन्हें बताए कि दूकानें ही जली हैं, बहीखाते नहीं. बही-खाते हम घर पर रखते हैं."

मां जी की आंखों से रोकते-रोकते भी दो-चार आंसू टपक पड़े—"काहे को परेशान होते हो? दूकानें जल गईं, समझो हमारे भाग्य भी जल गए! श्यामू ने तो . . ."

"क्या किया श्यामू ने? कुछ कहो तो."

"आखिर कब तक चुप रह सकती हूं," मां जी अटकते-अटकते बोलीं—"इस घर में आज तक तुम से छिपा कर कभी कुछ नहीं हुआ, अब . . ."

बाबू जी उबल पड़े—"पहेलियां क्यों बुझा रही हो? सीधी बात करो न, किया क्या तुम्हारे लाड़ले ने?"

"लाड़ला तो तुम्हारा भी था, मेरा ही क्यों?" मां जी ने उन्हें सीधे देखते हुए कहा—"जिन-जिनका बकाया था उन सबसे वसूल करके श्याम ने सट्टा खेल कर सब गंवा दिया . . ." पर उनकी बात पूरी होने से पहले ही बाबू जी उछलकर बैठ गए—"क्या? क्या कह रही हो? . . . श्यामू ने . . ." उनकी आवाज ही नहीं सारा शरीर कांप रहा था गुस्से के कारण.

मां जी यह सब पहले ही जानती थीं. बड़े शांत स्वरों में बोलीं—"गलती किसी की नहीं. श्यामू पढ़ा-लिखा नहीं. बहीखातों के अलावा शायद ढंग से एक चिट्ठी भी नहीं लिख पाता है. पर दोनों लड़के तुम्हें चाहते हैं. तुम्हारे दुःख से दुखी हैं."

"दुखी हैं! सट्टे में रुपया गंवा दिया और . . ."

"चीखो मत . . . राजू ने रुपया और कमाने के लिए ट्यूशनें भी करनी शुरू कर दी हैं. अपनी बहू को भी काम पर लगा दिया. अब दोनों मियां-बीवी तुम्हारे घर में डेढ़ हजार महीना से ज्यादा लाकर देते हैं. . . श्यामू कुछ कर नहीं सकता—न नौकरी न मेहनत-मजूरी. उसने सट्टे से ही धन खींच-खींच कर लाने की सोची. यह तो अपनी सामर्थ्य की बात है."

फटी-फटी आंखों से चुपचाप बाबू जी मां जी को देखते ही रह गए. आगे वह ही बोलीं—"कितना चाहती थी कि श्यामू भी थोड़ा पढ़ जाए, पर तुमने . . ."

"मेरे चाहने न चाहने से ही कुछ होना था क्या? राजू ने क्या मेरे चाहने से ही पढ़ा इतना? कितनी गालियां देता था मैं, फिर तुम्हीं कहां खुश थीं उन दोनों से . . ." थके-हारे-से बाबू जी लेट गए और मां जी खाली गिलास उठाकर चली गईं.

•

अभी तक घर में एक रीति-सी चली आई थी कि जब भी रीता-दीपक की, तथा राजू के पुत्रों—शिवम् और देवम् की मासिक परीक्षाएं होतीं, वे अपनी रिपोर्टों पर बाबू जी से चुपचाप हस्ताक्षर करवा लेते. और बाबू जी ने कभी निगाह उठाकर देखने का भी कष्ट नहीं किया कि वे पास हुए हैं या फेल. वे तो राजू को गालियां देते कि नन्हे-नन्हे बच्चों को, जिनकी खेलने-खाने की उम्र है, पढ़ाई जैसे नीरस काम में लगा दिया. अरे, यह पढ़ाई-लिखाई उनके लिए है जो बिना इसके जिंदा न रह सकें. हमारे लिए क्या? घर में इतना धन है कि घर बैठे खाएं, तो भी सात पुश्तों तक न चुके.

पर अबकी बार जब नवीं कक्षा में पढ़ने वाली रीता ने अपनी मासिक रिपोर्ट बाबू जी के सामने रखी, तो वे तमककर उठ बैठे. रीता आठ विषयों में से छह में फेल थी. अंकों के नीचे खिंची लाल लकीरें जैसे चीख-चीखकर बता रही थीं. "क्यों री, यह पढ़ाई है तेरी? छह विषयों में फेल! ले जाओ इसे मेरे सामने से, मैं नहीं करता हस्ताक्षर!"

रीता सन्न रह गई. दीपक, शिवम्, देवम् भी बाबू जी की दहाड़ सुनकर गीदड़ों की तरह दुबक गए और हैरान होने लगे. 'अब की बाबू जी को क्या हो गया?'—चारों की चोर दृष्टि एक दूसरे से जैसे चुप-चाप पूछ रही थी. जवाब किसी के पास नहीं और पास भी चारों में से कोई नहीं हुआ था.

राजकिशोर की चार वर्ष की लड़की पूनम ने आकर बाबू जी के गले में हाथ डाल दिए—"बाबू जी, हमें पहियों पल घूमने वाली लेलदाड़ी मंगा दो न, जैसी अनु के पास है!"

पहले की बात होती, तो पूनम के मुंह से निकलने की देर होती और गाड़ी आ जाती, पर अब?

बाबू जी की आंखों में आंसू भर आए और उसे उन्होंने सीने से चिपटा लिया. "हां हां, क्यों नहीं, मेरी लाड़ो के लिए पटरियों पर चलने वाली लेलदाड़ी आएगी

उसमें से धुआं
देवम् हंस
नहीं निकलता,
बाबू जी
चलेगी."
"आज ही
उठी.
"आज?
गाड़ी चलाएगी
ना बाबा, बहु
की तरह मचल
"नहीं . . .
रुआंसी हो रही
"छि: उत
तेरे लिए बड़ी-सी
"कब बड़ी
"जल्दी हो
पड़ेगी उतनी ही
दीपक, री
बाबू जी ने एक
बोले—"क्यों रे,
बिना कोई बड़ा
अपनी किताब तो
देवम् बड़
तीनों चुपचाप
पढ़ना-लिखना
नहीं लगता था.
"मेरी समझ में ही
हो क्या गया है?
दुनिया में पढ़ने-
अगर कोई भी न
पर उसमें इत
धोखा देकर इध
कोई भी पुस्तक
एक-एक शब्द पढ़
को रुला ही देते.
अक्सर वह
उन्हें कुछ न मालूम
को कुछ न कुछ पढ़
कि वे उनके सामने
उस दिन मां
वह बाबू जी को
कुछ पढ़ रहे थे.
बैठे, बोले—"बहुरा
कुछ जैसे शिक्षक हों
कापी खींचकर नि
थोड़ा लिखा है. देख
राजू को कुछ न
कुछ कह ही न सके.
करुणा हाथ

उसमें से धुआं निकलेगा, वह छुक-छुक बोलेगी."

देवम् हंस पड़ा—"नहीं, बाबू जी, उसमें से धुआं नहीं निकलता, वह तो बिजली से चलती है!"

बाबू जी हंस दिए—"हां हां, वह बिजली से भी चलेगी."

"आज ही मंगा दो न, बाबू जी!" पूनम मचल उठी.

"आज? न बाबा, अभी तू इतनी छोटी-सी है, गाड़ी चलाएगी ... कहीं एक्सीडेंट कर बैठी, तो? ना बाबा, बहुत नुकसान होगा!" बाबू जी भी पूनम की तरह मचल कर बोले.

"नहीं ... नहीं होता है एक्सीडेंट!" पूनम रुआंसी हो रही थी—"अनु भी तो चलाती है!"

"छि: उतनी छोटी गाड़ी का क्या करेगी? मैं तेरे लिए बड़ी-सी मंगाऊंगा थोड़ी बड़ी हो जा बस!"

"कब बड़ी होऊंगी बाबू जी, मैं?"

"जल्दी हो जाएगी, बड़ी, बस पढ़ा कर—जितना पढ़ेगी उतनी ही बड़ी होती जाएगी!"

दीपक, रीता, देवम्, शिवम् सभी हंसने लगे. बाबू जी ने एक बार मुस्करा कर बच्चों को देखा और बोले—"क्यों रे, हंसते क्यों हो तुम लोग? पढ़े-लिखे बिना कोई बड़ा आदमी नहीं बनता. अच्छा, देवम्, अपनी किताब तो ला. देखूं क्या पढ़ता है तू?"

देवम् घबड़ा गया. रीता, दीपक, शिवम्—तीनों चुपचाप खिसक गए, देवम् बेचारा पकड़ा गया.

पढ़ना-लिखना तो उन्हें किसी को भी अच्छा नहीं लगता था. पर दीपक बड़ा ही ढीठ हो गया था—"मेरी समझ में ही नहीं आता, बाबू जी को आजकल हो क्या गया है? पहले तो वे ऐसे थे नहीं. पता नहीं क्यों दुनिया में पढ़ने-लिखने का रिवाज चलाया गया है? अगर कोई भी न पढ़ता, तो क्या नुकसान हो जाता!"

पर उसमें इतना साहस नहीं था कि बाबू जी को धोखा देकर इधर-उधर खिसक जाए. और फिर कोई भी पुस्तक उसके बस्ते में से खोल बैठते, तो एक-एक शब्द पढ़वाकर, उसके अर्थ पूछ-पूछकर दीपक को रुला ही देते.

अक्सर वह चारों बच्चों को साथ बैठा लेते. लाख उन्हें कुछ न मालूम हो, पर उनकी उपस्थिति में बच्चों को कुछ न कुछ पढ़ना ही पड़ता. यह तो हो नहीं सकता कि वे उनके सामने कागजों पर कट्टमकट्टा खेलने लगते.

उस दिन मां जी किसी काम में लगी थीं. छोटी बहू बाबू जी को दूध देने गई. बाबू जी लेटे-लेटे कुछ पढ़ रहे थे. बहू को सामने देख एकाएक उठ बैठे, बोले—"बहूरानी, एक बात है, बेटा ..." एक क्षण कुछ जैसे झिझके हों, फिर अपने तकिये के नीचे से एक कापी खींचकर निकाल ली और बोले—"यह ... यह थोड़ा लिखा है. देखना, ठीक लिखा है या नहीं? बेटा, राजू को कुछ न बताना ... मैं ... मैं ..." आगे वह कुछ कह ही न सके.

करुणा हाथ में कापी ले धीरे से चली गई.

भोली शंका—

"बाबू जी, अगर लिफाफा भारी है, तब तो और टिकट लगाने से यह और भारी हो जाएगा!"

अपने कमरे में आकर कापी खोली, तो उसे लगा जैसे कंठ में कुछ अटकने-सा लगा है. यहां से न हटी, तो शायद अभी ही रो पड़ेगी—राजकिशोर के सामने ही, जो चुपचाप अपने पलंग पर पड़ा कुछ पढ़ रहा था. फिर कैसे छुपाएगी बाबू जी की बात?

करुणा आंखों में आंसू भरे रसोई में आ गई. कापी में टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में हिन्दी व अंग्रेजी के न जाने कितने शब्द लिखे पड़े थे. कहीं सही, कहीं गलत.

तो बाबू जी आजकल सारे दिन यही किया करते हैं. लिखना सीखते हैं, पढ़ना सीखते हैं. सारे दिन बच्चों को ही नहीं पढ़ाते, स्वयं भी पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं.

उसे ऐसा लगा जैसे बाबू जी एकाएक छोटे-से बच्चे बन गए हों, कितने दयनीय, कितने निरीह!

दूकानें जला दी गई थीं. सभी को दु:ख हुआ था. राजकिशोर व करुणा को भी बहुत दु:ख हुआ था. पर अब न जाने क्यों बाबू जी का यह रवैया देख, बच्चों के अध्ययन के प्रति उनको उतना ध्यान देते देख उनका मन संतोष एवं उत्साह से भर उठा था.

करुणा चुपचाप नित्य बाबू जी की कापी ठीक कर दिया करती और आगे का काम लिख दिया करती. और हर शाम को बाबू जी दुगने उत्साह से उस के हाथ में अपनी कापी सरका दिया करते.

(शेष पृष्ठ ५४ पर)

कहानी

दो गौरैयां

kissekahani.com

घर में हम तीन ही व्यक्ति रहते हैं—मां, पिता जी और मैं, पर पिता जी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है; हम तो जैसे यहां मेहमान हैं, घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं.

आंगन में आम का पेड़ है. तरह-तरह के पक्षी उसपर डेरा डाले रहते हैं. जो भी पक्षी पहाड़ियों-घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुंचता है, पिता जी कहते हैं, वही सीधा हमारे घर पहुंच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवा कर लाया हो! यहां कभी तोते पहुंच जाते हैं, तो कभी कौवे और कभी तरह-तरह की गौरैयां. वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएं, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं!

घर के अंदर भी यही हाल है. बीसियों तो चूहे बसते हैं. रात भर एक कमरे से दूसरे कमरे में भागते फिरते हैं. वह धमाचौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते. बर्तन गिरते हैं, डिब्बे खुलते हैं, प्याले टूटते हैं. एक चूहा अंगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है; शायद बूढ़ा है, उसे सर्दी बहुत लगती है. एक दूसरा है जिसे बाथरूम की टंकी पर चढ़कर बैठना पसंद है. उसे शायद गर्मी बहुत लगती है. बिल्ली हमारे घर में रहती तो नहीं, मगर घर पर उसे भी पसंद है, और वह कभी-कभी झांक जाती है; मन आया तो अंदर आकर दूध पी गई, न मन आया तो बाहर से ही 'फिर आऊंगी' कह कर चली जाती है. शाम पड़ते ही दो-तीन चमगादड़ कमरों के आर-पार पर फैलाए कसरत करने लगते हैं. घर में कबूतर भी हैं. दिन भर 'गुटर-गूं गुटर-गूं' का संगीत सुनाई देता रहता है. इतने पर ही बस नहीं, घर में छिपकलियां भी हैं और बर्रें भी हैं और चींटियों की तो जैसे फौज ही छावनी डाले हुए है.

अब एक दिन दो गौरैयां सीधी अंदर घुस आईं. और बिना पूछे उड़-उड़कर मकान देखने लगीं. पिता जी कहने लगे कि मकान का निरीक्षण कर रही हैं कि उनके रहने योग्य है या नहीं. कभी वे किसी रोशनदान पर जा बैठतीं, तो कभी खिड़की पर. फिर जैसे आईं थीं वैसे ही उड़ भी गईं. पर दो दिन बाद हमने क्या देखा कि बैठक की छत में लगे पंखे के गोले में उन्होंने अपना बिछावन बिछा लिया है, और सामान भी ले आई हैं और मजे से दोनों बैठी गाना गा रही हैं. जाहिर है, उन्हें घर पसंद आ गया था.

मां और पिता जी दोनों सोफे पर बैठे उनकी ओर देखे जा रहे थे. थोड़ी देर बाद मां सिर हिलाकर बोलीं: "अब तो ये नहीं उड़ेंगी. पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं. अब तो इन्होंने यहां घोंसला बना लिया है."

इस पर पिता जी को गुस्सा आ गया. वह उठ खड़े हुए और बोले: "देखता हूं ये कैसे यहां रहती हैं! गौरैया मेरे आगे क्या चीज है! मैं भी जात का खत्री हूं, अभी निकाल बाहर करता हूं."

"छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालोगे!" मां ने व्यंग्य से कहा.

मां कोई बात व्यंग्य में कहें, तो पिता जी उबल पड़ते हैं. वह समझते हैं कि मां उनका मजाक उड़ा रही हैं. वह फौरन उठ खड़े हुए और पंखे के नीचे जाकर जोर से ताली बजाई और मुंह से 'श...शू' कहा, फिर बांहें झुलाईं, फिर खड़े-खड़े कूदने लगे, कभी बांहें झुलाते कभी 'श... शू' करते.

गौरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झांककर देखा और दोनों एक साथ 'चीं-चीं' करने लगीं. और मां खिल-खिलाकर हंसने लगीं.

पिता जी को गुस्सा आ गया: "इसमें हंसने की क्या बात है?"

मां को ऐसे मौकों पर हमेशा मजाक सूझता है. हंसकर बोलीं: "चिड़ियां एक दूसरी से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?"

तब पिता जी को और

भी ज्यादा गुस्सा आ गया और वह पहले से भी ज्यादा ऊंचा कूदने लगे.

गौरैया घोंसले में से निकल कर दूसरे पंखे के डैने पर जा बैठीं. उन्हें पिता जी का नाचना जैसे बहुत पसंद आ रहा था. मां फिर हंसने लगीं : "ये निकलेंगी नहीं, जी. अब इन्होंने अंडे दे दिए होंगे."

"निकलेंगी कैसे नहीं?" पिता जी बोले और बाहर से लाठी उठा लाए. इस बीच गौरैयां फिर घोंसले में जा बैठी थीं. उन्होंने लाठी ऊंची उठाकर पंखे के गोले को ठकोरा. 'चीं-चीं' करती गौरैयां उड़कर पर्दे के डंडे पर जा बैठीं.

"इतनी तकलीफ करने की क्या जरूरत थी. पंखा चला देते, तो ये उड़ जातीं." मां ने हंसकर कहा.

पिता जी लाठी उठाए पर्दे के डंडे की ओर लपके. एक गौरैया उड़कर किचन के दरवाजे पर जा बैठी, दूसरी सीढ़ियों वाले दरवाजे पर.

मां फिर हंस दीं : "तुम तो बड़े समझदार हो, जी, सभी दरवाजे खुले हैं और तुम गौरैयों को बाहर निकाल रहे हो. एक दरवाजा खुला छोड़ो, बाकी दरवाजे बंद कर दो. तभी ये निकलेंगी.

— भीष्म साहनी —

अब पिता जी ने मुझे झिड़ककर कहा : "तू खड़ा क्या देख रहा है? जा, दोनों दरवाजे बंद कर दे!"

मैंने भागकर दोनों दरवाजे बंद कर दिए. केवल किचन वाला दरवाजा खुला रहा.

पिता जी ने फिर लाठी उठाई और गौरैयों पर हमला बोल दिया. एक बार तो झूलती लाठी मां के सिर पर लगते-लगते बची. 'चीं-चीं' करती चिड़ियां कभी एक जगह तो कभी दूसरी जगह जा बैठतीं. आखिर दोनों किचन की ओर खुलने वाले दरवाजे में से बाहर निकल गईं. मां तालियां बजाने लगीं. पिता जी ने लाठी दीवार के साथ टिका कर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे.

"आज दरवाजे बंद रखो," उन्होंने हुक्म दिया. "एक दिन अंदर नहीं घुस पाएंगी, तो घर छोड़ देंगी."

तभी पंखे के ऊपर से 'चीं-चीं' की आवाज सुनाई पड़ी. और मां खिलखिला कर हंस दीं. मैंने सिर उठा कर ऊपर की ओर देखा, दोनों गौरैयां फिर से अपने घोंसले में मौजूद थीं.

"दरवाजे के नीचे से आ गई हैं," मां बोलीं.

मैंने दरवाजे के नीचे देखा. सचमुच दरवाजों के नीचे थोड़ी-थोड़ी जगह खाली थी.

पिता जी को फिर गुस्सा आ गया. मां मदद तो करती नहीं थीं, बस, बैठी हंसे जा रही थीं.

अब तो पिता जी गौरैयों पर पिल पड़े. उन्होंने दरवाजों के नीचे कपड़े ठूंस दिए ताकि कहीं कोई छेद बचा नहीं रह जाए. और फिर लाठी झुलाते हुए उन पर टूट पड़े. चिड़ियां 'चीं-चीं' करतीं फिर बाहर निकल गईं, पर थोड़ी ही देर बाद वे फिर कमरे में मौजूद थीं. अब की बार वे रोशनदान में से आ गई थीं जिसका

एक शीशा टूटा हुआ था.

"देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो," मां ने अब की बार गंभीरता से कहा, "अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे. अब ये यहां से नहीं जाएंगी."

"क्या मतलब? मैं कालीन बरबाद करवा लूं?" पिता जी बोले. और कुर्सी पर चढ़कर रोशनदान में कपड़ा ठूंस दिया, और फिर लाठी झुलाकर एक बार फिर चिड़ियों को खदेड़ दिया. दोनों पिछले आंगन की दीवार पर जा बैठीं.

इतने में रात पड़ गई. हम खाना खाकर ऊपर जाकर सो गए. जाने से पहले मैंने आंगन में झांक कर देखा, चिड़ियां वहां पर नहीं थीं. मैंने समझ लिया कि उन्हें अक्ल आ गई होगी. अपनी हार मानकर किसी दूसरी जगह चली गई होंगी.

दूसरे दिन इतवार था. जब हम लोग नीचे उतरकर आए, तो वे फिर से मौजूद थीं और मजे से बैठी मल्हार गा रही थीं. पिता जी ने फिर लाठी उठा ली. उस दिन उन्हें गौरैयों को बाहर निकालने में बहुत देर नहीं लगी.

अब तो रोज यही कुछ होने लगा. दिन में तो वे बाहर निकाल दी जातीं, पर रात के वक्त जब हम सो रहे होते, तो न जाने किस रास्ते से व अंदर घुस आतीं.

पिता जी परेशान हो उठे. आखिर कोई कहां तक लाठी झुला सकता है? पिता जी बार बार कहें—"मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूं. मैं जात का खत्री हूं." पर आखिर वह भी तंग आ गए थे. आखिर जब उनकी सहनशीलता चुक गई, तो वह कहने लगे कि वह गौरैयों का घोंसला नोच कर निकाल देंगे. और वह फौरन ही बाहर से एक स्टूल उठा लाए.

घोंसला तोड़ना कठिन काम नहीं था. उन्होंने पंखे के नीचे फर्श पर स्टूल रखा, और लाठी लेकर स्टूल पर चढ़ गए. "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए," उन्होंने गुस्से से कहा.

घोंसले में से अनेक तिनके बाहर की ओर लटक रहे थे, गौरैयों ने सजावट के लिए मानो झालर टांग रखी हो. पिता जी ने लाठी का सिरा सूखी घास के तिनकों पर जमाया और दायीं ओर को खींचा. दो तिनके घोंसले में से अलग हो गए और फरफराते हुए नीचे उतरने लगे.

"चलो, दो तिनके तो निकल गए!" मां हंसकर बोलीं, "अब बाकी दो हजार भी निकल जाएंगे!"

तभी मैंने बाहर आंगन की ओर देखा. और मुझे दोनों गौरैयां नजर आईं. दोनों चुपचाप दीवार पर बैठी थीं. इस बीच दोनों कुछ-कुछ दुबला गई थीं, कुछ-कुछ काली पड़ गई थीं. अब वे चहक भी नहीं रही थीं.

अब पिता जी लाठी का सिरा घास के तिनकों के ऊपर रखकर वहीं रखे-रखे घुमाने लगे. इससे घोंसले के लंबे-लंबे तिनके लाठी के सिरे के साथ लिपटने लगे. वे लिपटते गए, लिपटते गए, और घोंसला लाठी के इर्द-गिर्द खिंचता चला आने लगा. फिर वह खिंच-खिंच कर लाठी के सिरे के इर्द-गिर्द लपेटा जाने लगा. सूखी घास और रूई के फाहे, और धागे और धिगलियां लाठी के सिर पर लिपटने लगीं. तभी सहसा जोर की आवाज आई : "चीं-चीं चीं-चीं!!!"

पिता जी के हाथ ठिठक गए. यह क्या? क्या गौरैया लौट आई है? मैंने झट से बाहर की ओर देखा. नहीं, दोनों गौरैयां बाहर दीवार पर गुमसुम बैठी थीं.

"चीं-चीं चीं-चीं!" फिर आवाज आई. मैंने ऊपर देखा. पंखे के गोले के ऊपर से दो नन्ही-नन्ही गौरैयां सिर निकाले नीचे की ओर देख रही थीं और चीं-चीं किए जा रही थीं. अभी भी पिता जी के हाथ में लाठी थी और उसपर लिपटा घोंसले का बहुत-सा हिस्सा था.

नन्ही-नन्ही दो गौरैयां! वे अभी भी झांके जा रही थीं और चीं-चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं : "हम आ गई हैं! हमारे मां-बाप कहां हैं?"

मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा. फिर मैंने देखा, पिता जी स्टूल पर से नीचे उतर आए हैं. और घोंसले के तिनकों में से लाठी निकाल कर उन्होंने लाठी को एक ओर को रख दिया है और चुपचाप कुर्सी पर आकर बैठ गए हैं. इस बीच मां कुर्सी पर से उठीं और सभी दरवाजे खोल दिए. नन्ही चिड़िया अभी भी हांफ-हांफ कर चिल्लाए जा रही थीं और अपने मां-बाप को बुला रही थीं.

उनके मां-बाप झट से उड़कर अंदर आ गए, और चीं-चीं करते उनसे जा मिले और उनकी नन्ही-नन्ही चोंचों में चुग्गा डालने लगे. मां और पिता जी और मैं उनकी ओर देखते रह गए. कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अब की बार पिता जी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुस्कराते रहे. ●

८।३० ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली–८.

शीर्षक प्रतियोगिता नं. २० का परिणाम

पुरस्कार विजयी शीर्षक :

'विषधर हो या हो तलवार, अपनी कुर्सी सदा बहार!'

प्रेषक :

अखिलेश श्रीवास्तव, सुपुत्र श्री ए. सी. श्रीवास्तव,
शांति कुटीर, पुरानी बस्ती, कटनी (म. प्र.).

शीर्षक प्र

ऊपर के चित्र को दे
एक सबसे अलग पोस्ट
मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार
पर भेजिए : संपादक, 'प

र देखा. और मुझे
चुपचाप दीवार पर
बला गई थीं, कुछ-
भी नहीं रही थीं.
घास के तिनकों
लगे. इससे घोंसले
साथ लिपटने लगे.
घोंसला लाठी के
कर वह खिच-खिच
जाने लगा. सूखी
र चिंगलियां लाठी
ओर की आवाज

क्या? क्या गौरैया
ओर देखा. नहीं,
बैठी थीं.
आई. मैंने ऊपर
नन्ही-नन्ही गौरैयां
थीं और चीं-चीं
के हाथ में लाठी
ा-सा हिस्सा था.
भी झांके जा रही
रचय दे रही थीं :
?"

फिर मैंने देखा,
है. और घोंसले
उन्होंने लाठी को
कुर्सी पर आकर
ीं और सभी दर-
ी भी हांफ-हांफ
मां-बाप को बुला

अंदर आ गए,
र उनकी नन्ही-
ं और पिता जी
कमरे में फिर से
पिता जी उनकी
●

रिणाम

बहार!'

तब,
ा.).

/ पृष्ठ : ३०

शीर्षक प्रतियोगिता—२३

फोटो : मौलिक वज़ कोटक

इस चित्र का शीर्षक बताइए

ऊपर के चित्र को देखिए और ज़रा सोचकर इसका एक बढ़िया और फड़कता हुआ शीर्षक बताइए. अपने उत्तर एक सबसे अलग पोस्ट कार्ड पर लिखकर हमें २० जनवरी तक भेज दीजिए. सबसे बढ़िया शीर्षक पर दस रुपये के मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार में मिलेंगी. हां, कार्ड पर अपना नाम और पता लिखना मत भूलिए. शीर्षक के कार्ड इस पते पर भेजिए : संपादक, 'पराग' (शीर्षक प्रतियोगिता-२३), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई—१.

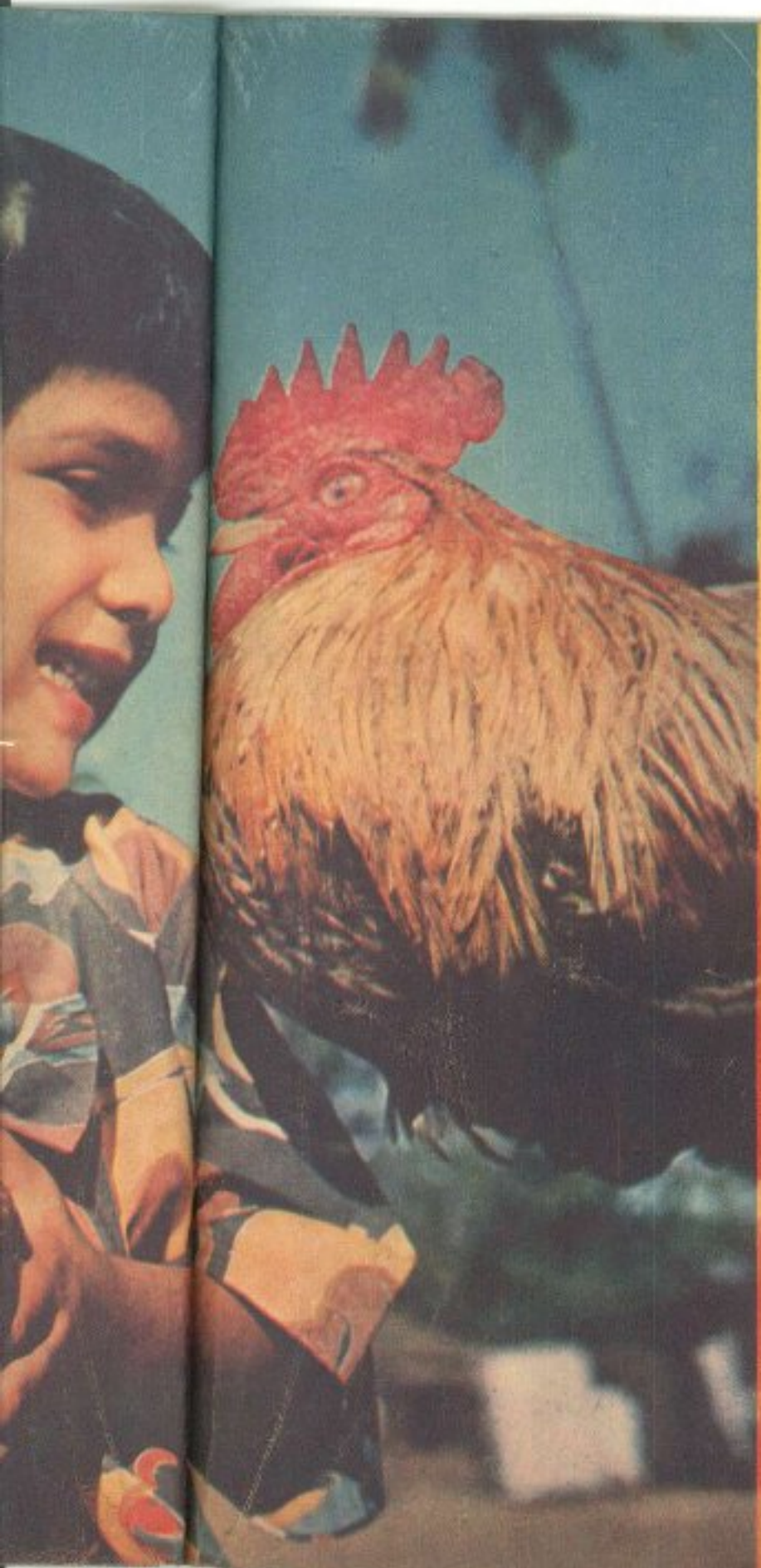

छाया : अनंत देसाई

नए साल का नया गीत

रात-दिन, मिनिट-क्षण का
कर लें हिसाब,
लंबा-सा जोड़-बाकी
बड़ा गुणा-भाग!

क्या तुमने पढ़ डाली
बीते हुए साल की
पूरी किताब?

सड़कों से गुजर गई
गरमी-बरसात;
किस-किस को याद करें
और करें बात!

धुंधलाए लगते हैं,
गरम-गरम काफी पर
उफनाते झाग!

कल होगी नई सुबह
और नई शाम;
डट कर अब कर डालें
कोई नया काम!

गाएं फिर गीत नया,
मौसम के होंठों पर
कोई नया राग!

बीते हुए साल की
पूरी किताब!

—अशोकरंजन सक्सेना

सोने की चिड़िया | (पृष्ठ १९ से आगे)

नहीं था कि कल की घटना के बाद आज फिर विनय उसके पास आएगा. विनय को देखकर उसे आश्चर्य भी हुआ और साथ ही प्रसन्नता भी. पर उसने नोट किया कि विनय के चेहरे पर उदासी और घबराहट है. रोज वाली मुस्कराहट आज उसके चेहरे पर नहीं थी. अरुण बेचैन हो गया.

अंदर आते हुए विनय ने कहा, "तुम शायद सो रहे थे. मैंने कई बार दरवाजा खटखटाया. . .तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं लग रही है. . ."

"हां. . .आं. . .! मामूली-सा सिर-दर्द है और कुछ भी नहीं." अरुण ने लापरवाही से कहा. फिर विनय से बोला, "तुम आज उदास लग रहे हो, क्या बात है?"

"नहीं तो," विनय की मरियल-सी आवाज निकली.

"नहीं तो —कहने से क्या होता है? मैं देख नहीं रहा क्या?"

विनय चुप रहा. अरुण फिर लेट गया.

"अच्छा, अब तू आया है, तो तुझ से एक काम तो करवाएंगे ही," अरुण ने बात पलटते हुए कहा.

विनय ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे देखा.

"चाय बनाकर पिला. सिर में बहुत तेज दर्द है. बुखार भी है. शायद ए. पी. सी. लेनी पड़ेगी."

विनय चाय बनाने के लिए उठ खड़ा हुआ और अरुण की तरफ देखकर जबरदस्ती मुस्करा दिया. शायद इसलिए कि अभी तो अरुण कह रहा था मामूली-सा सिर-दर्द है और अब कह रहा है कि बहुत तेज सिर-दर्द हो रहा है और बुखार भी है. चाय, चीनी, दूध का अतापता पूछकर विनय रसोई में चला गया.

●

विनय चाय बनाकर अंदर ले आया. अरुण यह जानकर प्रसन्न हुआ कि विनय ने अपने लिए भी चाय बनाई है. वह तो सोचता था, जैसे दूध में जहर होता है वैसे ही चाय में भी होता होगा. लेकिन नहीं, चाय में जहर नहीं होता, तभी तो वह अपने लिए भी बना लाया.

विनय ने कपों में चाय डाल दी और अरुण को दवाइयों वाली आलमारी में से ए. पी. सी. लाकर दे दी. चाय के साथ गोली खाकर अरुण लेट गया. विनय कुर्सी पर बैठा रहा. दोनों ही चुप थे. कल की घटना ने उन दोनों पर न जाने क्या प्रभाव डाला था कि दोनों आपस में अजनबी से लग रहे थे. यह चुप्पी अरुण ने ही तोड़ी.

"यार, विनय, चाय तो तू फर्स्ट-क्लास बनाता है!"

"खूब बनाओ मेरा मजाक! ठीक नहीं बनी न?"

"वाह! मैं तो कह रहा हूं—फर्स्ट क्लास बनी है और तू पूछ रहा है अच्छी नहीं बनी न. मजाक नहीं, चाय सचमुच बढ़िया थी."

दोनों फिर चुप हो गए. अरुण ने महसूस किया कि विनय कुछ कहना चाहता है, पर कह नहीं पाता है. होंठ कुछ कहने को फड़फड़ा कर रह जाते हैं.

आखिर साहस कर विनय कह ही डालता है, "अरुण, कल की घटना के लिए मैं तुमसे बहुत शर्मिंदा हूं. मैं न जाने क्या-क्या बक गया. मुझे माफ कर दो."

अरुण को झटका-सा लगा, जैसे बिजली का करेंट छू गया हो. यह क्या हुआ! उसने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि विनय उससे इस तरह इस मामूली-सी बात के लिए माफी मांगने आएगा. वह तो बात को टाल-सा गया था. विनय ने इसे इतनी गहराई से क्यों लिया? वह उसे क्या जवाब दे? उसे माफ कर दे? उसका अपराध क्या? आवेश में आकर अगर वह कुछ कह भी गया, तो इससे क्या? दोस्तों में तो न जाने कितनी कहा-सुनी होती है, गाली- गलौज और हाथापाई तक की नौबत आ जाती है. लेकिन लड़ने-झगड़ने के बाद मन फिर पहले ही की तरह साफ. इस तरह माफी मांगी जाती है क्या? लेकिन यह विनय. . .

●

अरुण कांपने लगा. न जाने बुखार से या विनय की बात से. विनय ने न जाने किस तरह से ये शब्द कहे कि उसे रुलाई आ गई. वह बड़ी मुश्किल से अपनी रुलाई पर काबू पा सका. वह बात को गंभीर रूप देने के बजाय हंसी-हंसी में उड़ा देना चाहता था. इसके लिए उसने अपने आपको तैयार कर लिया. चेहरे पर मुस्कराहट लाता हुआ विनय से बोला, "मैं तुम्हें माफ नहीं करूंगा, कभी माफ नहीं करूंगा!"

विनय कुछ कहने को हुआ. पर इससे पहले कि वह कुछ बोलता अरुण ने झट से मुस्कराते हुए कहा, "हां, एक शर्त पर तुम्हें माफ कर सकता हूं."

विनय ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसे देखा.

"अगर कल की गलती का दंड आज भुगत लो."

"मैं समझा नहीं," विनय ने धीरे से कहा.

"यानी कि कल से डबल दूध आज पी लो."

"मैं आया भी इसी लिए था!" विनय का स्वर लड़खड़ा रहा था.

"क्या!" अरुण का सारा शरीर झनझना गया. उसने पूछना चाहा—इसी लिए आया था तू? दूध पीने? झूठ! मैं मान ही नहीं सकता. पर वह उससे कुछ भी न पूछ सका.

"हां, लेकिन दूध पीने नहीं, ले जाने आया हूं."

"क्या कह रहा है तू?" अरुण को समझ नहीं आया कि आज यह कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहा है.

"अरुण, दूध तो मैं आज भी नहीं पिऊंगा. मैं तो बरसों बिना दूध पिए रह सकता हूं. पर वह मेरा ढाई साल का भाई है न, वह नहीं रह सकता. इसी के लिए दूध मांगने आया हूं. वह थोड़ा समझदार होता, तो

वह भी न मांगता.
कि दूध नहीं मांगना
बोल-बोलकर पिलाते
तो उसने सब उलट दि
अभागा' कहकर पीटा
बोलते-बोलते विनय का
हालत देखी नहीं गई.
चला आया. मां को
चल गया कि मैं तुम्हा
वह मुझ पर नाराज
दूध तुम्हें वापस लौट
दे दो. मां जब बाहर
दूंगा. पाव भर दूध
अरुण को लगा
वाली है. जमीन फटेगी
लेकिन जमीन कहीं ऐसे
विनय उसी ठंडे
"अरुण, दूध तुम मुझे
पड़ेगा, उतार दूंगा."
अरुण चिल्ला पड़
सुना नहीं जाता! श
है. दोस्ती का क्या
तुम अपने भाई को
पिलाते रहो और मुझे
दूसरे के सुख-दुःख न ब
तुमने मुझे अब तक क्यों
मैं भी तुम्हें मदद देने
आवाज कंपकंपा गई.
है कि दूध की जगह पान
जा सकता है. जाओ,
पिलाकर आओ. मैं तुम
अरुण ने बुखार क
शरीर लिये उठकर र
वाली दो बड़ी-बड़ी बोत
से भर ीं. दूध भरते-
इतना दूध मिलता ह
और किसी बेचारे को
आटा पीना पड़ता है.
बता देगा. जरा नहीं
दूध की बोतलें ले
वहां नहीं था. सहसा उ
चला गया. वह धक् से
रखकर वह बाहर अ
विनय अपने घर की त
बुखार की वजह से इतनी
विनय को पकड़ ले.
अंदर आकर वह
और सुबकने लगा. उ
इन दूध की बोतलों को
जहर मिला हुआ है, त

वह भी न मांगता. पर उस बेचारे को क्या मालूम कि दूध नहीं मांगना है. उसे दस दिन से पानी में आटा घोल-घोलकर पिलाते रहे हैं. पर आज उसे पिलाने लगे तो उसने सब उलट दिया. मां ने पहले तो उसे 'अभागा-अभागा' कहकर पीटा और फिर खुद ही रोने लगी." बोलते-बोलते विनय का गला रुंध गया. "मुझ से उसकी यह हालत देखी नहीं गई. इसी लिए तुम्हारे पास दूध मांगने चला आया. मां को भी नहीं बताया है. अगर उसे पता चल गया कि मैं तुम्हारे पास दूध मांगने आया था, तो वह मुझ पर नाराज होगी. हो सकता है पीटे भी और दूध तुम्हें वापस लौटा देने के लिए कहे. तुम मुझे दूध दे दो. मां जब बाहर गई होगी, तो मैं भाई को पिला दूंगा. पाव भर दूध काफी रहेगा."

अरुण को लगा कि जमीन अब बस फटने ही वाली है. जमीन फटेगी और वह उसमें समा जाएगा. लेकिन जमीन कहीं ऐसे फटती है!

विनय उसी ठंडे और शांत स्वर में आगे बोला, "अरुण, दूध तुम मुझे कर्ज की तरह दे दो. जब भी बन पड़ेगा, उतार दूंगा."

अरुण चिल्ला पड़ा, "बस करो. विनय, बस करो! सुना नहीं जाता! शरीर पर कांटे से चुभने लग गए हैं. दोस्ती का क्या मतलब होता है? क्या यही कि तुम अपने भाई को पानी में आटा घोल-घोलकर पिलाते रहो और मुझे बताओ तक न? जो दोस्त एक दूसरे के सुख-दुःख न बांटे, फिर काहे के दोस्त? बताओ, तुमने मुझे अब तक क्यों नहीं बताया? एक दोस्त के नाते मैं भी तुम्हें मदद देने का हक रखता हूं." अरुण की आवाज कंपकंपा गई. "मुझे आज पहली बार पता चला है कि दूध की जगह पानी में आटा घोलकर भी पिलाया जा सकता है. जाओ, विनय, पहले अपने भाई को दूध पिलाकर आओ. मैं तुम्हें दूध लाकर देता हूं रसोई से."

अरुण ने बुखार की भी परवाह न की और तपता शरीर लिये उठकर रसोई में आ गया. उसने शरबत वाली दो बड़ी-बड़ी बोतलें साफ कीं और दोनों बोतलें दूध से भर दीं. दूध भरते-भरते वह सोचने लगा, किसी को इतना दूध मिलता है कि वह दूध से दूर-दूर भागता है और किसी बेचारे को दूध की जगह पानी में घुला हुआ आटा पीना पड़ता है. . .मम्मी पूछेंगी तो सब सच-सच बता देगा. जरा नहीं डरेगा.

दूध की बोतलें लेकर वह अंदर आया, तो विनय वहां नहीं था. सहसा उसका ध्यान खुले दरवाजे की तरफ चला गया. वह धक् से रह गया. दूध की बोतलें मेज पर रखकर वह बाहर आया, तो देखा कि बहुत दूर विनय अपने घर की तरफ भागा जा रहा था. अरुण में बुखार की वजह से इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह भागकर विनय को पकड़ ले.

अंदर आकर वह निढाल-सा पलंग पर गिर पड़ा और सुबकने लगा. उसका मन किया कि मेज पर पड़ी इन दूध की बोतलों को फर्श पर दे मारे, क्योंकि इनमें जहर मिला हुआ है, तभी तो विनय इन्हें छोड़ कर चला गया. यह दूध विनय के लिए जहर है. उसके लिए भी यह दूध जहर क्यों नहीं बन जाता?

अरुण पलंग की पट्टी पर जोर-जोर से सिर पटकने लगा, ताकि उसे सोने की चिड़िया वाला पाठ एकदम भूल जाए. वह विनय की तरह याद करने की लाख कोशिश करे, तो भी याद न हो. . . ●

२६० आदर्श नगर, जयपुर –४ (राज.).

बोध कथा

धीरज का फल

सड़क के पास ही वह घर था. भिखमंगे भोजन के लिए इस घर का द्वार खटखटाया करते. गृहिणी रोज रोज की मुसीबत से तंग आ गई और उसने किसी को भी भोजन न देने का निश्चय किया. फिर भी कोई अड़ ही जाता, तो उसपर वह अपना कुत्ता छोड़ देती.

एक दिन एक युवक आया. उसके कपड़े साफ-सुथरे थे. शक्ल से वह भिखमंगा नहीं लगता था. हां, उसकी पतलून फटी हुई थी. हाथ में सूई पकड़े हुए उसने उस घर का दरवाजा खटखटाया. गृहिणी ने दरवाजा खोला, तो वह विनम्रता से बोला—"श्रीमती जी, मुझे कुछ धागा चाहिए. पतलून सीना चाहता हूं." स्त्री को तरस आ गया. उसने उसे धागा दे दिया.

थोड़ी देर बाद युवक पुनः लौट आया. स्त्री से बोला—"श्रीमती जी, मेरी पतलून की मरम्मत नहीं हो पा रही है, क्योंकि मेरे पास जोड़ने के लिए कपड़ा नहीं है. क्या आप कृपा करके कपड़े का एक टुकड़ा देंगी?" स्त्री ने युवक को कपड़े का टुकड़ा दे दिया.

घंटे भर बाद युवक फिर आया. कहने लगा, "श्रीमती जी, मेरी पतलून की हालत इतनी खस्ता है कि मरम्मत नहीं हो सकती. क्या आप अपने पति की कोई पुरानी पतलून देने की कृपा करेंगी?"

स्त्री हंसने लगी. वह बोली—"तुम बड़े चतुर हो. यदि तुमने शुरू में ही मुझ से पतलून मांगी होती, तो मैं तुम्हें धक्के देकर निकाल देती." यह कहकर उसने युवक को एक पुरानी पतलून दे दी.

युवक ने पिछवाड़े जाकर पतलून बदली और वापस आकर कहने लगा, "श्रीमती जी, पतलून के लिए धन्यवाद. लेकिन यह मेरी कमर में कुछ ढीली है. यदि आपके पास कुछ बचा-खुचा खाना हो, तो पतलून मेरी कमर में खूब फिट बैठेगी!"

स्त्री युवक की बात सुनकर फिर हंसने लगी. उसने उसे पेट भरकर खाना खिलाया.

—नारायण गोपालानी

कपड़े नहीं के बराबर थे. उसे हमेशा यही डर बना रहता था कि सब लड़कियां मन ही मन हंसी उड़ा रही होंगी.

गनीमत थी कि पहला पीरियड शर्मा दीदी का था. वह बड़े रूखे मिजाज की महिला थीं. सुमति ने उन्हें स्थित-प्रज्ञ की उपमा दे रखी थी. न उन्हें कभी हंसते देखा था, न नाराज होते. पर जब हिंदी पढ़ाने लगती थीं, तब एकदम दूसरी ही बन जाती थीं. यद्यपि सुमति को उनसे डर भी बहुत लगता था, पर वह ही उसकी सबसे प्रिय टीचर थी.

दीदी को कुछ रजिस्टर वर्क करना था. उन्होंने लड़कियों से रिवीजन के लिए कहा और काम में लग गईं. इससे इतनी तो राहत हुई कि वह लड़कियों की व्यंग भरी नजरों से बच गई.

दरअसल उन लड़कियों को दोष देना व्यर्थ था; क्योंकि आज दसवीं कक्षा की ओर से सुमति की कक्षा की फेयरवेल पार्टी थी. सब लोगों ने तय किया था कि उस दिन नए कपड़े पहन कर आएंगी. सुमति ने कभी कपड़ों के लिए जिद नहीं की थी, पर इस बार उसने मम्मी को पटा ही लिया था.

सात-आठ दिन तो पापा की तनखा की राह में बीत गए. फिर घर में जब कपड़ा आया, तो मेहमानों की जैसे बाढ़ आ गई. उसका फ्रॉक कटा हुआ ही पड़ा रहा और मम्मी को मशीन की ओर देखने की भी फुरसत न मिली. मेहमान बिदा हुए, तो मम्मी की कमर ने जोर पकड़ा. कल शाम उसका मन रखने के लिए पापा उसे लेकर बाजार गए थे. पर एक-एक फ्रॉक की कीमत सुनते ही खून सूख जाता था. निराश होकर वह खाली हाथ ही लौट आए थे.

"मेरी कोईसी भी साड़ी पहन जा," सुबह मम्मी ने कहा था.

वह मुंह फुलाकर बैठ गई थी. हुंह, साड़ी आजकल कोई पहनता भी है. फिर मम्मी के पास लेटेस्ट स्टाइल की कोई साड़ी भी तो नहीं थी.

"इसमें मुंह फुलाने की क्या बात है?" मम्मी ने नाराज होकर कहा, "हम लोगों ने तो सातवीं क्लास से ही साड़ी पहनना शुरू कर दिया था."

सुमति चुपचाप खाने पर से उठ आई थी. मम्मी की 'हमारे जमाने' वाली बात शुरू हो जाती थी, तो फिर से रुकने का तो नाम ही नहीं लेती थी. अब मम्मी को कौन समझाए?

"ऐसा कोई कायदा तो नहीं है कि फेयरवेल के दिन नए ही कपड़े पहने जाएं?" बड़े भैया ने अपनी वाली लगाई.

"फोटो में कोई नया-पुराना पता थोड़े ही चलता

—मालती जोशी—

kissekahani.com

फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से दाँतों को नियमित रूप से ब्रश करने से मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है।

क्योंकि फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट दाँतों और मसूढ़ों, दोनों की रक्षा करता है।
यह दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है। इस टूथपेस्ट में मसूढ़ों की रक्षा के लिए कई खास तत्व मिले होते हैं।
मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न रोकने का सबसे बढ़िया तरीका है, दाँतों को नियमित रूप से सुबह और रात को फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट से ब्रश करना। आपके बच्चे को यह ज़रूरी बात सिखाने का सबसे बढ़िया समय यही है—उसका बचपन। जी हाँ, अभी, इसी उम्र में उनमें सीखने की बड़ी लगन रहती है। इसलिए यह शुभ शुरूआत आज ही से क्यों न की जाय!

फ़ोरहॅन्स से दाँतों की देखभाल सीखने में देर क्या सबेर क्या

फ़ोरहॅन्स
दाँतों के डाक्टर द्वारा बनाया हुआ टूथपेस्ट

मुफ़्त! 'दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा' संबंधी चित्रण पुस्तिका*
१० भाषाओं में मिलती है। मंगवाने का पता है: मैनर्स डेण्टल एडवाइजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग १००३१, बम्बई-१ बी आर

नाम: _____ उम्र _____
पता: _____
_____ P. 10

*कृपया (डाक-खर्च के लिए) १४ पैसे के टिकट साथ भेजिए और इनमें से अपनी पसन्द की भाषा के नीचे रेखा खींच दीजिए: अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू, बंगाली, तामिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़

NIH 5 EBC-128

है," छोटे भैया ने पुट दिया.

"बेटी, वह जन्म-दिन वाली पहन जाओ न, एकाध बार ही तो पहनी है," पापा ने तसल्ली देते हुए कहा.

सुमति को लगा, सब लोग मिलकर उसे पागल बना देंगे. एकाध बार ही सही, पहनी तो है. और इन दोनों भाइयों को देखो, बस हर वक्त चिढ़ाते रहेंगे. इससे तो भाई के बदले कोई बहन होती, तो ठीक था; उससे अदल-बदलकर कपड़े तो पहन सकती थी, जरा बैरायटी हो जाती.

गुस्से में उसने यूनीफार्म ही पहन ली थी. और दस मिनिट पहले ही स्कूल के लिए चल पड़ी थी.

दूसरा पीरियड गोयल दीदी का था. कपड़ों और गहनों की उन जैसी शौकीन स्टाफ में कोई भी टीचर न थी. कोई भी नई चीज उनकी नजरों से न छूटती थी. फिर आज तो सुमति की पूरी कक्षा में गोयल दीदी के लिए कई आकर्षण थे. पूरे पीरियड इसी की चर्चा रहेगी. सुमति का मन हुआ कि सिरदर्द का बहाना बनाकर घर भाग चले, जिससे पीरियड से और पार्टी से छुटकारा मिल जाए. उसने बड़े यत्न से अपने प्रिय स्कूल के लिए एक कविता बनाई थी. पर उसे सबके सामने जाने में शर्म आ रही थी. पता नहीं लोग उसके बारे में, उसके घर के बारे में क्या सोचेंगे!

पर भागने का उसे मौका ही न मिला. बड़ी बहन जी को किसी जरूरी मीटिंग में जाना था, इसलिए पार्टी कुछ जल्दी ही रख ली गई थी.

विदाई-समारोह बड़ा ही भावपूर्ण रहा. दसवीं की छात्राओं ने बड़े ही भावपूर्ण भाषण दिए. सुमति नहीं जानती थी कि सब लोग उसे इतना चाहती हैं, इतनी इज्जत करती हैं. करीब-करीब प्रत्येक भाषण में उसका उल्लेख था. किसी ने उसे विद्यालय की महादेवी वर्मा, किसी ने सरोजनी नायडू, तो किसी ने लता मंगेशकर का खिताब दे दिया था. वह तो संकोच से गड़-सी गई थी.

जब उसकी कक्षा की बारी आई, तो उसे उठना ही पड़ा. कितने यत्न से लिखी थी कविता, पर गला इतना भर आया था कि पढ़ी ही नहीं गई. शर्मा दीदी ने उसके हाथ से कागज लेकर अपनी गंभीर वाणी में कविता पढ़ना प्रारंभ किया. सुमति ने देखा कि पढ़ते हुए उनकी आंखों की कोरें भी कुछ भीग आई थीं.

कविता का समाप्त होना था कि प्रशंसा के पुल बंध गए. बड़ी बहन जी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, "बड़ी 'इंटेलीजेंट' लड़की है! मुझे उम्मीद है, आगे चलकर बहुत 'शाइन' करेगी."

"मैं तो इसी साल मेरिट में एक्सपेक्ट कर रही हूं," शर्मा दीदी ने कहा.

"इतनी जहीन लड़की है, पर घमंड नाम को भी नहीं है," इतिहास वाली बहन जी बोलीं.

कार्यक्रम समाप्त होने के बाद भी सुमति के कानों में टीचर्स की प्रशंसा और लड़कियों के भाषण गूंज रहे थे. फोटोग्रुप में जब बड़ी बहन जी ने उसे अपने पास बिठाया, तो उसके पांव मानो धरती पर नहीं थे.

घर लौटते हुए रास्ते में छोटे भैया मिले—"क्यों, पार्टी नहीं हुई क्या?"

"हुई तो! हां, जरा जल्दी हो गई; दो बजे बड़ी बहन जी को एक मीटिंग में जाना था."

छोटे भैया का चेहरा उतर गया. कैरियर से एक पैकेट निकालते हुए उन्होंने कहा, "यह तेरी फ्रॉक है, सुबह से मम्मी मशीन पर बैठी हैं, खाना तक नहीं खाया!"

"ओह, मम्मी ने इतनी तकलीफ क्यों की? वैसे ही उनकी तबीयत ठीक नहीं थी. फ्रॉक सिलना क्या ऐसा जरूरी था?" सुमति की आंखों में आंसू आ गए.

"यह तू अब कह रही है! सुबह तो ऐसा तूफान मचा कर आई थी..." छोटे भैया ने कहा.

"सुबह की बात सुबह गई! अच्छा अब आए हैं तो घर तक ले ही चलिए," कहते हुए वह उचककर साइकिल के कैरियर पर बैठ गई.

दरअसल वह भैया से कहना चाह रही थी—भैया, सुबह मुझे पता थोड़े ही था कि मनुष्य की असली शोभा उसके गहनों-कपड़ों से नहीं होती, बल्कि उसके गुणों से होती है. लोग कपड़ों की तारीफ करते हैं और भूल जाते हैं, पर गुणी व्यक्ति को लोग हमेशा हमेशा याद रखते हैं. जैसे शायद मुझे भी स्कूल में...पर छीः छोटे भैया से क्या ऐसी बात कही जा सकती है...ऐसी मजाक बनाएंगे कि बस! ●

१०५/१२ टी. टी. नगर, भोपाल.

एक थैली के ...

"तूने खूब भांपा, मैं वाकई ये कंबल लेकर चुनाव लड़ने की तैयारी में गांव जा रहा हूं! वाह! बेटे, वाह! तू एक दिन जरूर नेता बनकर मेरा नाम रोशन करेगा!"

कहानी

दो पाट : दो हाथ

kissekahani.com

सच, मैं बहुत परेशान हूं. एक बहुत बड़ी समस्या अचानक मेरे सामने आन खड़ी हुई है. अभी-अभी मम्मी ने मुझे आदेश दिया है कि मैं फौरन जाकर चक्की से आटा पिसा लाऊं ; शाम का खाना बनाने के लिए घर पर थोड़ा भी आटा नहीं है.

आटा पिसाकर लाने में मुझे कोई परेशानी नहीं है, न ही इससे मेरी पढ़ाई में कोई फर्क पड़ता है. पिछले दो-तीन सालों से मैं यह काम बखूबी करता भी आ रहा हूं. परेशानी तो अब, इसी साल से, हो गई है—शरद को लेकर.

शरद मेरा दोस्त है. पहले भी था. वह शायद किसी बड़े अफसर का लड़का है. इस बात का पता मैंने उसके कपड़ों आदि से लगाया है. वह हमेशा धुले और प्रेस किए हुए कपड़े पहनता है, रिक्शे से स्कूल आता है और शायद उसके चेहरे पर रईसी शान-शौकत भी है.

पिछले साल वह स्टेशन रोड पर रहता था. पर, अब उसने मकान बदल दिया है. अब वह चौक में रहता है. मैंने उसका नया घर देखा भी है. उसकी कोठी चक्की के बिलकुल पास में है और यही मेरी परेशानी का सब से बड़ा कारण है. अगर कहीं शरद ने मुझे साइकिल पर गेहूं की बोरी ले जाते देख लिया, तो. . .?

इस समय मुझे वह दिन बार-बार याद आ रहा है, जब मैंने पहली बार उसे अपना घर दिखाया था. मारे घमंड के मैं फूला न समाता था. '. . .यह हमारा पढ़ने का कमरा है, यह सोने का, यह खाने का और यह. . .' मैंने शान बघारने के इरादे से उसे सब कुछ बता दिया था. अब पछता रहा हूं कि उस दिन मैंने उसे यह भी क्यों नहीं बता दिया कि यह घर मेरा पुश्तैनी है यानी हमारे बाबा के बाबा के जमाने का. और यह भी कि हम लोगों ने तब से अब तक इसकी मरम्मत में एक भी पैसा खर्च नहीं किया है. मकान में पैसा कौन लगाए, पहले दोनों वक्त खाना ही खा लें तो बहुत है. यदि इतनी बातें मैं उसे उस वक्त बता देता, तो शायद वह मुझसे दोस्ती ही न करता और तब आज मुझे इतनी परेशानी भी महसूस न होती.

खैर, मैं कोई बुद्धू थोड़े ही हूं. मैंने भी वह तरकीब सोची है कि बस! मैं अपने छोटे भाई अजित से कहूंगा कि वह साइकिल पर गेहूं लादकर ले चले. मैं उसके पीछे पीछे चलूंगा—थोड़ा फासला रखते हुए. फिर चक्की पर पहुंचकर मैं गेहूं तुलवा दूंगा. इस तरह चक्की वाला भी बेईमानी नहीं कर पाएगा और शरद ने यदि मुझे देख भी लिया, तो भी मेरी कलई तो खुलने से रही. पर, परेशानी इसमें भी एक है—अजित को मनाने की. बिना चॉकलेट के वह मानने वाला नहीं. खैर, चलो, वह मैं उसे दे दूंगा, इज्जत का सवाल जो है.

मैंने तो शरद को सीधा-सादा समझ रखा था, पर है वह भी पूरा घाघ. इतनी सावधानियों के बाद भी मैंने चाहा था कि उसकी नजरों से बचा रहूं. इसलिए मैं उसकी कोठी के छज्जे के नीचे वाली पटरी पर से होता हुआ चुपचाप सड़क पार कर गया. उस समय तो वह मुझे न देख पाया, भला छज्जे से नीचे झांककर पटरी

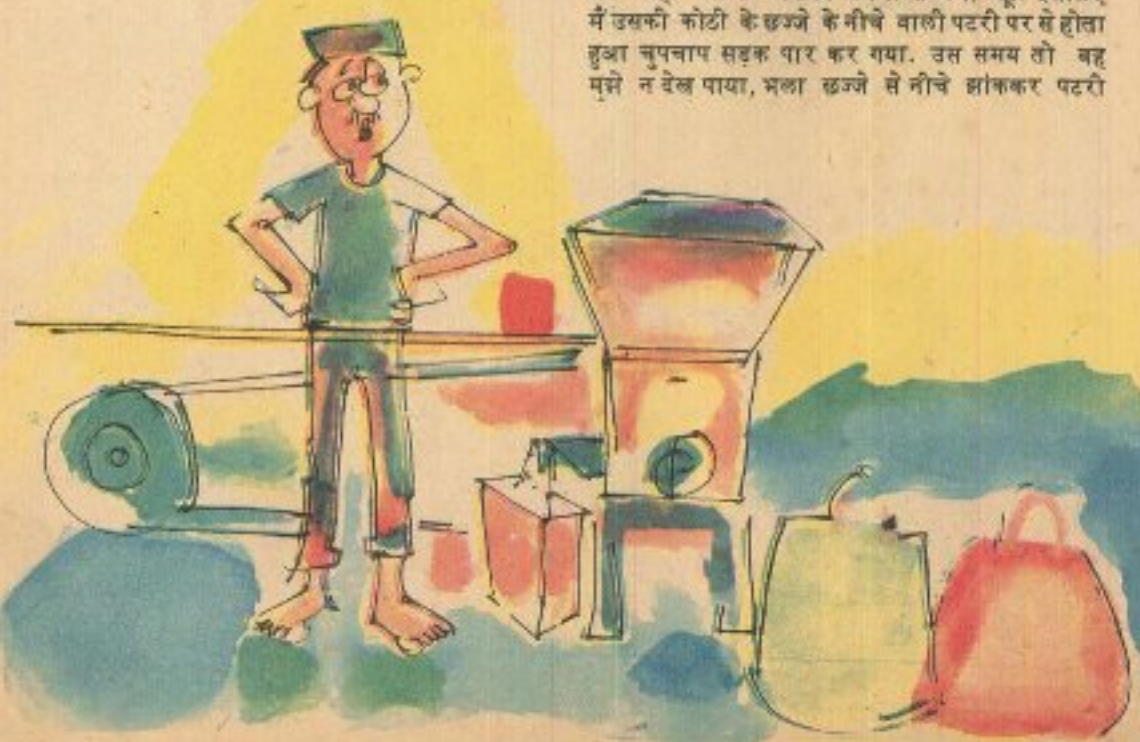

पर चलने वालों को
पर पहुंचकर जब मैं
उड़ गए. छज्जे के
की ओर देख रहा था
मैंने सोचा—वह
काटे पर रख दूं. अजित
"भैया, बोरी उतारो
खड़ा रहूंगा?" पर इ

— मुकुंद

पर चलने वालों को भी कोई देखता है. लेकिन चक्की पर पहुंचकर जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो मेरे होश उड़ गए. छज्जे के एक कोने पर खड़ा हुआ वह चक्की की ओर देख रहा था. हो सकता है, मुझे घूर रहा हो.

मैंने सोचा—वह वहां से हटे, तो मैं बोरी उठाकर कांटे पर रख दूं. अजित बार-बार रट लगाए जा रहा था—"भैया, बोरी उतारो न, कब तक इसे लिये मैं ऐसे ही खड़ा रहूंगा?" पर इतनी जल्दी पीछे मुड़कर देखना भी तो ठीक न था; इस तरह तो रंगे हाथों पकड़े जाने की पूरी संभावना थी.

बड़ी देर बाद मैंने पीछे मुड़कर देखा, वह वहां नहीं था. मैंने एक चौकन्नी नजर चारों ओर डाली और बोरी कैरियर से उतार कर पलड़े पर रख दी. इतना सब कुछ करने के बाद मैं इस तेजी और सफाई से वहां से हटकर कुछ दूरी पर खड़ा हो गया, जैसे बोरी और उसमें भरे गेहूं से मेरा कोई भी संबंध न हो.

— मुकुंदमाधव मेहरोत्रा —

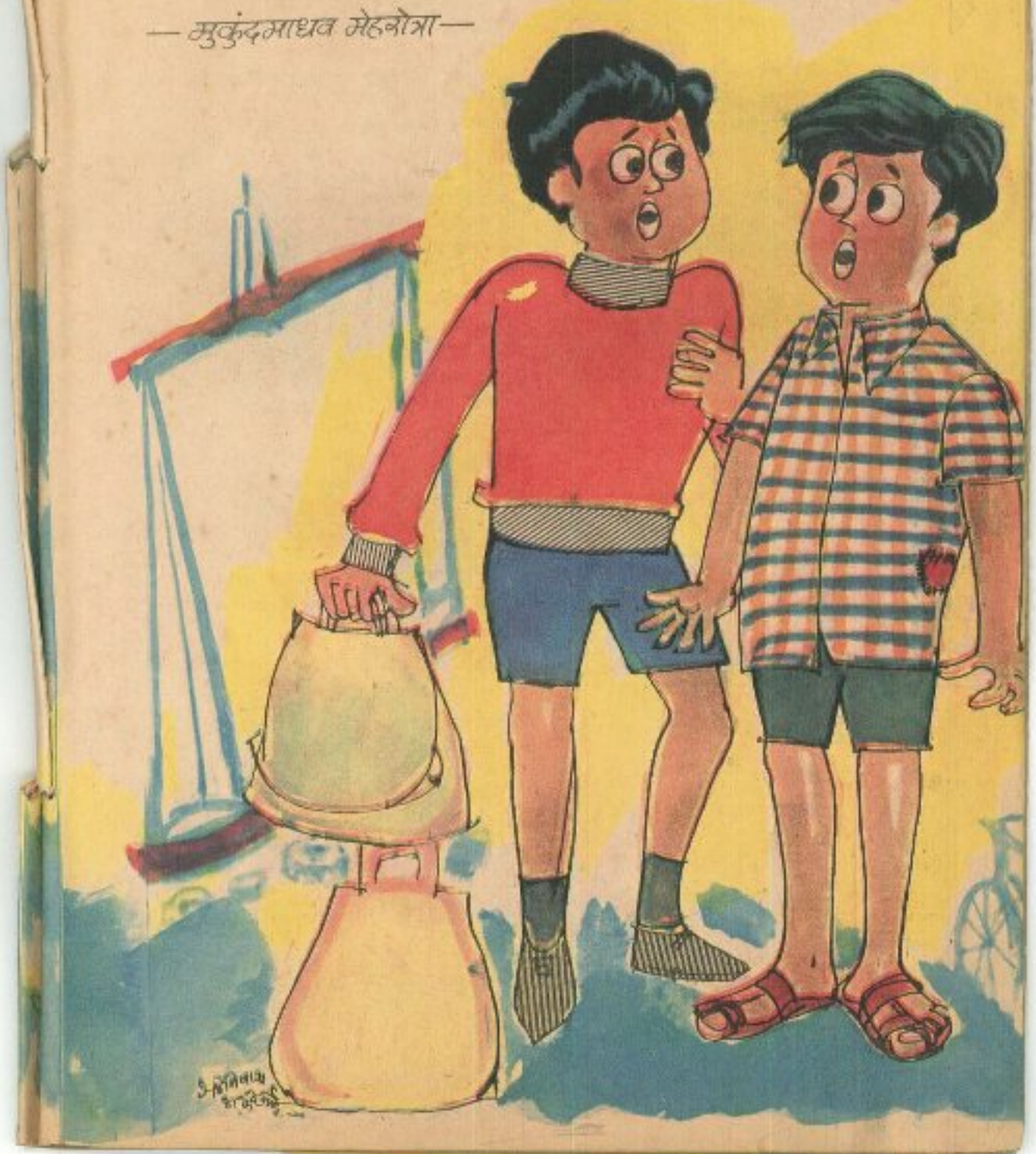

भाग्यशाली हैं वे, जो देते हैं...

अपने बच्चों को भारतीय श्रेष्ठ खिलौने दीजिए

मेलोडी ट्रेन
बैटरी-चालित

हल्ला गुल्ला गर्ल
बैटरी-चालित

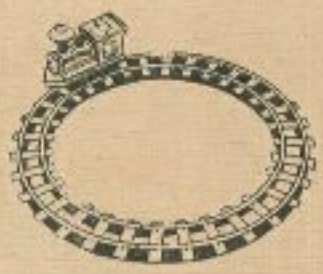

खिलौनों में सर्वाधिक किस्में

चलते-चलते इंजिन गाता है—
"टिवकल टिवकल लिट्ल स्टार्स"
और आपकी पसंद की अन्य धुनें भी

व्यायाम तथा
मनोरंजन सीखने
के लिए.

राजा टॉयज

समस्त भारत में सभी प्रमुख
खिलौने बिक्रेताओं तथा सुपर बाजार से उपलब्ध.

●

निर्माता—

सेंट्रल स्टोर्स राजा टॉयज कं.

४६३६. डिप्टीगंज, दिल्ली–६ ● फोन : ५६२९२३

होनहार सपूत--

—नंदलाल शर्मा

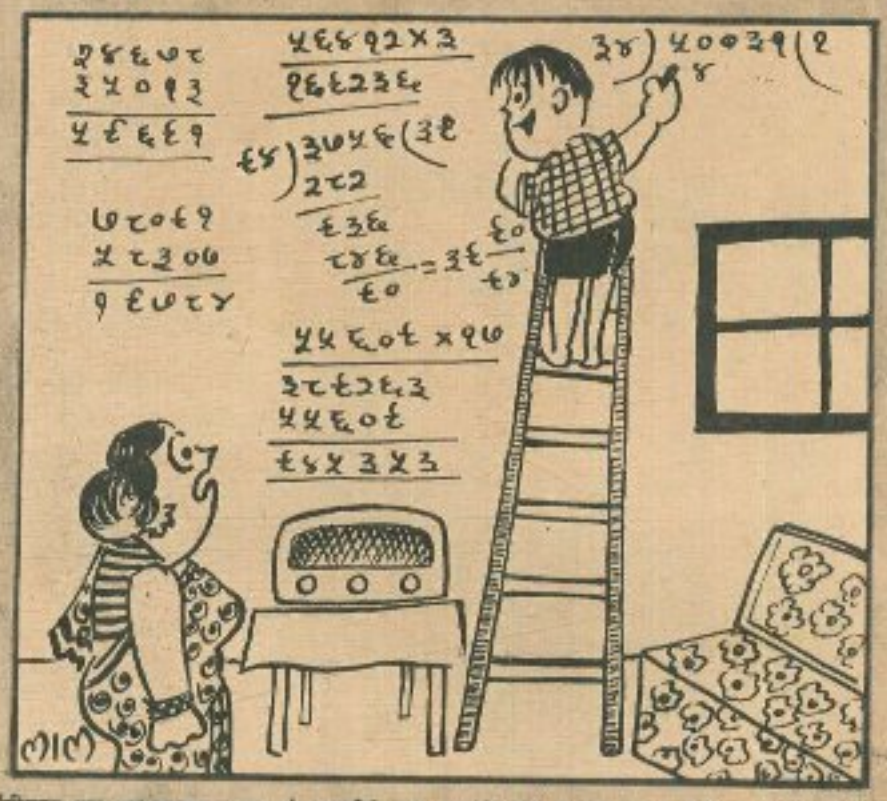

"दीवार पर सवाल कर रहा हूं, मम्मी! तुम कहती थीं न, कि कुछ ऐसे काम किया कर जिससे सब आने-जाने वाले तेरी तारीफ़ किया करें!"

"आटा लेने कितनी देर में आऊं?" गेहूं तुल जाने के बाद मैंने धीमी आवाज में पूछा. मुझे डर था कि कहीं कोई मुझे गेहूं के बारे में बातें करते न देख ले.

"आधे घंटे में." चक्की वाले ने बोरी उठाकर अंदर रखते हुए जवाब दिया.

"अच्छा, तो मैं आधे घंटे बाद आऊंगा," मैंने चक्की वालेसे खिसकने की अनुमति लेनी चाही.

"क्यों, क्या तुम इतनी देर खड़े नहीं रह सकते?" जवाब चक्की वाले ने नहीं, बल्कि मेरे पीछे से किसी और ने दिया.

"ऐं!" मैंने चौंककर पीछे देखा. मेरे कंधे पर हाथ रखे शरद खड़ा था. मेरे होश उड़ गए. पर तभी मैंने देखा, उसके दूसरे हाथ में गेहूं की बोरी थमी हुई थी. मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा.

"क्यों, शरद भाई, आज नौकर कहां गया?" मैंने थोड़ा खुश होते हुए पूछा. मुझे उस समय एकाएक ध्यान आ गया कि पिछली बार जब मैं उसके घर गया था, गंदे-से कपड़े पहने कोई अधेड़ व्यक्ति छज्जे की सफाई कर रहा था. मेरा अनुमान था कि वह नौकर ही होगा.

"यार, तुम भी क्या बातें करते हो, नौकर को निकाले तो पूरा एक महीना हो गया!" शरद ने मेरा कंधा दबाते हुए कहा. "काम-धाम वह ढंग का करता ही न था. सब्जी लाने भेजो तो पैसों में गोलमाल, आटा पिसाने भेजो तो साहब बहादुर के पास तौल का कोई हिसाब ही नहीं. बाबू जी कहते हैं कि इससे अच्छा काम तो हम लोग खुद ही कर सकते हैं, फिर नौकर की जरूरत ही क्या?" शरद ने गेहूं की बोरी पलड़े पर रख दी—"सच, मुकुंद भाई, नौकर रखा जाता है आराम के लिए; पर अक्सर वह खुद ही सिर पर एक बोझ बन जाता है. अब तो हमने सोच लिया है कि अपनी जिंदगी भर सारे काम खुद अपने हाथों से ही करेंगे."

"हां, वह तो है ही," मैंने अपनी प्रसन्नता दबाते हुए कहा.

'चट्ट'—एकाएक चक्की वाले ने स्विच ऑन कर दिया और विरोधी दिशाओं में घूमते हुए चक्की के दोनों पाट, सुनहरे गेहूं को सुगंधित आटे में बदलने लगे.

द्वारा श्री हृदयेश, बक्सरिया, शाहजहांपुर (उ. प्र.).

कहानी

खरगोश की हार

kissekahani.com

रविवार की सुबह थी. निर्मल आकाश में चमकता हुआ सूर्य निकला था. झाऊ चूहा अपने घर में बड़े आराम से बैठा हुआ था. अचानक ही उसने एक गीत गुनगुनाना प्रारंभ कर दिया. जब वह इस प्रकार धीमे स्वर से गा रहा था, तभी उसके मन में आया कि जब तक मेरी स्त्री बच्चों को नहलाए, तब तक मैं थोड़ी देर खेत में टहल लूं और देखूं कि मेरी शलजमें कैसी हैं.

शलजमें उसके घर के पास ही लगी हुई थीं और वह अपने परिवार सहित उन्हें खाया करता था. इसी कारण वह उनकी इस प्रकार देखभाल करता था जैसे वे उसी की हों. उसने जैसा सोचा वैसा किया, और झटपट खेत की राह ली. वह अभी घर से थोड़ी ही दूर पर पहुंचा था कि उसे एक खरगोश आता दिखाई दिया. झाऊ चूहे ने उसे नम्रतापूर्वक नमस्कार किया. खरगोश उस चरागाह में बड़े घराने का माना जाता था और साथ ही तेज चलने वाला भी था. उसने झाऊ चूहे के नमस्कार का तो कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि उपेक्षा भाव से उससे पूछा, "क्या मामला है, जो तू इतने सवेरे यहां खेत में इधर से उधर दौड़ लगा रहा है?"

"मैं घूमने जा रहा हूं," झाऊ चूहे ने उत्तर दिया.

"घूमने?" खरगोश हंसने लगा. "मैं तो सोचता हूं कि तू अपनी टांगों का अवश्य ही किसी और अच्छे काम में उपयोग कर सकता है."

इस उत्तर से झाऊ चूहे को गहरा धक्का लगा. वह सब कुछ सह सकता था, किंतु अपनी टांगों पर कोई बात नहीं आने देना चाहता था, क्योंकि वे कुदरती टेढ़ी-मेढ़ी थीं.

"तू तो सचमुच ही ऐसा समझे बैठा है," झाऊ चूहा खरगोश से बोला, "मानो तू अपनी टांगों से मुझसे कुछ अधिक कर सकता है!"

"मैं तो ऐसा ही समझता हूं," खरगोश ने कहा.

"यह तो जांचने से ही पता लगेगा," झाऊ चूहे ने अपनी बात साफ की. "मैं सच कहता हूं कि यदि हम शर्त लगाकर दौड़ें, तो मैं तुझ से आगे निकल जाऊंगा."

"मुझे तो हंसी आती है, तू और तेरी ये टेढ़ी-मेढ़ी टांगें! और सपना देखता है मुझसे आगे निकलने का!" खरगोश बोला. "किंतु जहां तक मेरा संबंध है, मुझे कोई आपत्ति नहीं. शर्त क्या रहेगी?"

"दस बोरी शलजम!" झाऊ चूहा बोला.

"मंजूर है, शुरू करो, अभी दौड़ हो जाए!"

"नहीं, इसकी इतनी जल्दी नहीं है," झाऊ चूहे ने कहा. "मैं तो अभी बिलकुल भूखा हूं. पहले मैं घर जाकर थोड़ा नाश्ता करूंगा. आधा घंटे में मैं यहीं वापस आता हूं." और इतना कहकर उसने घर की राह ली.

जब झाऊ चूहा घर पहुंचा, तो वह अपनी स्त्री से बोला, "जल्दी से कपड़े पहन ले, तुझे मेरे साथ खेत पर चलना पड़ेगा."

"मामला क्या है?" उसकी स्त्री बोली.

"मैंने खरगोश के साथ दस बोरी शलजम की शर्त लगाई है. मैं उसके साथ दौड़ूंगा और तुझे मेरे साथ रहना होगा!"

"हे भगवान!" झाऊ चूहे की स्त्री चीख उठी. "क्या तुम्हारी अक्ल बिलकुल मारी गई है? तुम खर-

गोश के मुकाबले में कैसे जीत सकोगे?"

"बकबक मत कर," झाऊ चूहा बोला. "यह मेरा काम है! उठ, कपड़े पहन कर मेरे साथ चल." और झाऊ चूहे की स्त्री विवश होकर उसके साथ चल दी.

जब वे रास्ते में थे, तो झाऊ चूहा अपनी स्त्री से बोला, "अब जो मैं कहूं, उसे ध्यान में रखना. देख, वहां उस बड़े खेत में हम दौड़ेंगे; खरगोश एक लीक में दौड़ेगा और मैं दूसरी में दौड़ूंगा. हम उस ओर से दौड़ना शुरू करेंगे. तुझे यहां लीक में खड़े रहने के सिवाय और कुछ नहीं करना होगा, और जब खरगोश दूसरी ओर पहुंचे, तो उससे कह देना—मैं तो पहले ही पहुंच गया हूं."

इसी तरह बातें करते वे खेत पर पहुंच गए. झाऊ चूहे ने अपनी स्त्री को उसके खड़े होने का स्थान दिखाया और खेत पर आगे चला गया. जब वह दूसरी ओर पहुंचा, तो खरगोश पहले से ही वहां डटा था.

"दौड़ शुरू करें?" खरगोश बोला.

"बिलकुल!" झाऊ चूहे ने उत्तर दिया.

"तो फिर शुरू!" कहकर दोनों अपनी-अपनी लीक में खड़े हो गए. खरगोश ने गिनना शुरू किया. "एक. . . दो. . . तीन. . . !" और वह आंधी के

—विजयकुमार आहुजा—

समान भाग खड़ा हुआ. झाऊ चूहा तो केवल लगभग तीन कदम दौड़कर वापस लीक पर आ गया और आराम से बैठ गया.

इधर जब खरगोश पूरी रफ्तार से दौड़ता हुआ खेत के दूसरे सिरे पर पहुंचा, तो झाऊ चूहे की स्त्री बोल उठी—"मैं तो पहले ही पहुंच गया हूं!"

इससे खरगोश को बहुत आश्चर्य हुआ. इसके अलावा कि जिसने उसे पुकारा, वह स्वयं झाऊ चूहा ही है, वह और कुछ समझा ही नहीं, क्योंकि झाऊ चूहे की स्त्री बिलकुल अपने पति जैसी लगती थी. वह सोचने लगा कि जरूर कुछ दाल में काला है और पुकार उठा: "एक बार और वापस दौड़!" और वह आंधी के समान भागा, जिससे कि उसके कान सिर के ऊपर उड़ने लगे.

झाऊ चूहे की स्त्री अपने स्थान पर ही आराम से खड़ी रही. अब जब खरगोश दूसरी ओर पहुंचा, तो झाऊ चूहा बोल उठा—"मैं तो पहले ही पहुंच गया हूं."

जोश में भरा हुआ खरगोश चिल्ला उठा, "एक बार और, चलो वापस दौड़ो!"

"जितनी बार तेरी इच्छा हो, मैं तैयार हूं!" झाऊ चूहे ने उत्तर दिया.

इस प्रकार खरगोश तिरेसठ बार और दौड़ा और झाऊ चूहे ने हर बार वैसा ही किया. किंतु चौंसठवीं बार खरगोश आखिर तक नहीं पहुंचा. खेत के बीच में ही वह धरती पर ढेर हो गया. अपनी बेहोशी टूटने पर उसे बड़ी लज्जा आई. झाऊ चूहे ने अपनी जीती हुई शलजमें लीं और अपनी स्त्री को लीक से बुला लिया तथा दोनों खुशी-खुशी घर चले आए. ●

५१९ पटेल नगर,
मेरठ शहर (उ. प्र.)

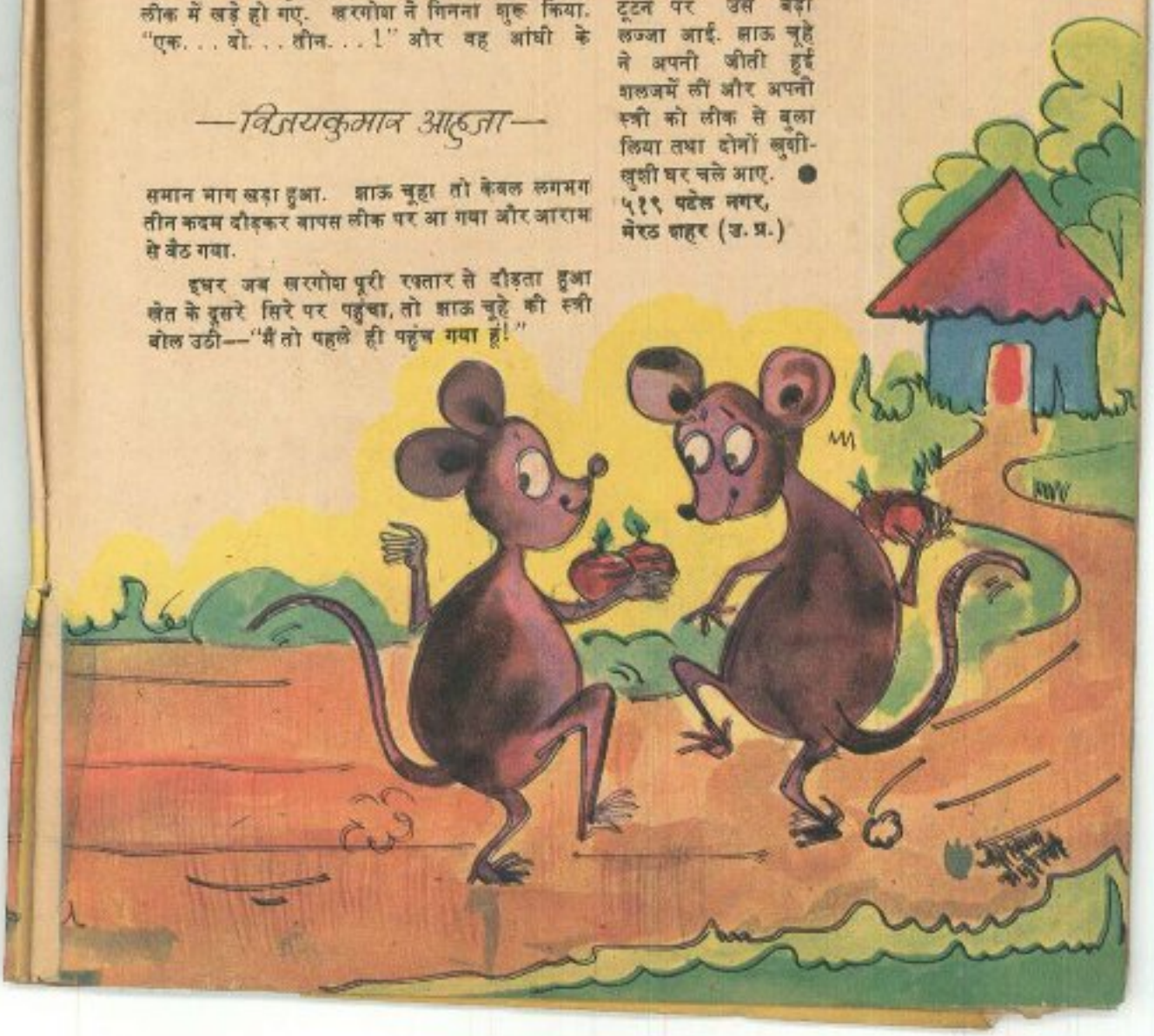

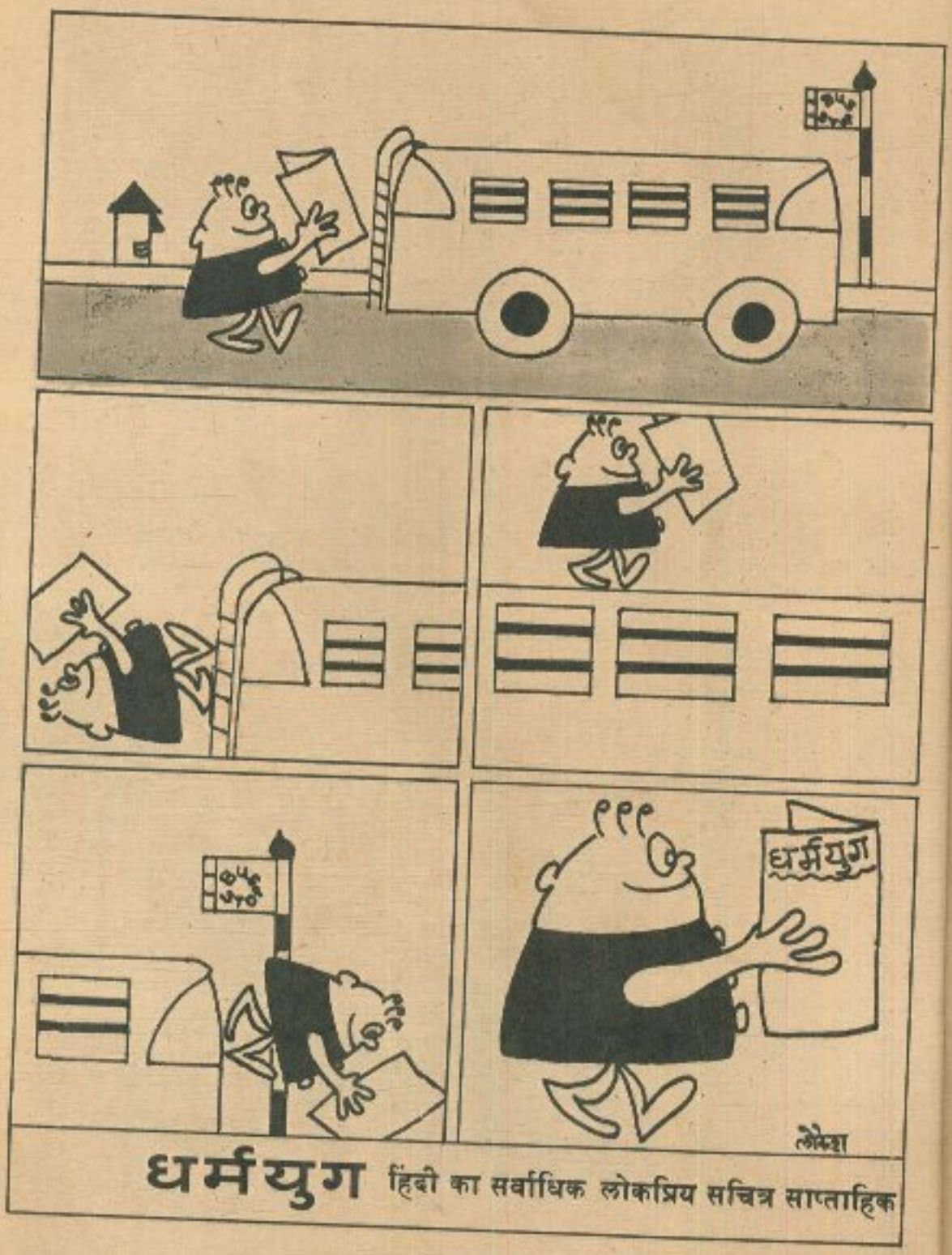

वर्मा जी मकान दे
मालिक से कहने
इस मोहल्ले की अ
यहां कोई आदमी
वाले मकान के बा
बिलकुल कंकाल न
मकान मालि
का सबूत है. यह
न मिलने की वजह

फतेहपुर के बिज
'इस खंभे को
अगर किसी ने छुआ
कार्रवाई की जाए

परीक्षा हो रही
दहाड़े, "ए संतू,
"मास्टर जी,
देखो', मैं तो उसी

प्रोफेसर शर्मा
प्रसिद्ध है. एक
शाम को घर पहुंचक
अंदर से पत्नी
नहीं है."
"अच्छी बात
यह कहकर वह उल

ठाकुर भूधरसिंह
बंबई सेंट्रल ब
गांव जाने के लिए
सज्जन ने जवा
कर वह सज्जन टे
घूमघामकर आठ घं
से निकले, तो देख
इंतजार में खड़े हैं.
आपको अभी तक
ठाकुर साहब
है—मैं गिनता रहा
६१ वीं आती ही ह

kissekahani.com

कहो कैसी रही

वर्मा जी मकान देखकर वापस बाहर निकले तो मकान मालिक से कहने लगे—"भई, तुम तो कहते थे कि इस मोहल्ले की आब-हवा इतनी अच्छी है कि आज तक यहां कोई आदमी बीमार ही नहीं पड़ा; लेकिन सामने वाले मकान के बाहर बैठे हुए उस आदमी को ही देखो, बिलकुल कंकाल नजर आता है."

मकान मालिक ने कहा—"यह आदमी मेरी बात का सबूत है. यह डाक्टर है और वर्षों से कोई मरीज न मिलने की वजह से भूखों मर रहा है!"

•

कलंहपुर के बिजली घर के बाहर लगी हुई सूचना : 'इस खंभे को छूने वाले की मृत्यु निश्चित है. अगर किसी ने छुआ, तो उस पर नियमानुसार अदालती कार्रवाई की जाएगी!'

•

परीक्षा हो रही थी. मास्टर घासीराम ओर से दहाड़े, "ए संतू, बार-बार पीछे क्या देख रहा है?"

"मास्टर जी, प्रश्न-पत्र में नीचे लिखा है —'पीछे देखो', मैं तो उसी का पालन कर रहा हूं!"

•

प्रोफेसर शर्मा अपने भुलक्कड़ स्वभाव के लिए प्रसिद्ध हैं. एक दिन अपने विचारों में खोए हुए शाम को घर पहुंचकर उन्होंने दरवाजा खटखटाया.

अंदर से पत्नी ने कहा—"प्रोफेसर साहब घर पर नहीं हैं."

"अच्छी बात है, जब वह आ जाएंगे तब आऊंगा!" यह कहकर वह उल्टे पैरों वापस हो गए.

•

ठाकुर भूधरसिंह पहली बार बम्बई आए. उन्होंने बंबई सेंट्रल बस स्टाप पर एक सज्जन से पूछा, "गिरगांव जाने के लिए मुझे कौनसी बस पकड़नी होगी?"

सज्जन ने जवाब दिया—"६१ नंबर की." यह कहकर वह सज्जन टैक्सी में सवार हो गए और कई जगह घूमघामकर आठ घंटे बाद जब उसी बस स्टाप की तरफ से निकले, तो देखा ठाकुर साहब अभी भी बस की इंतजार में खड़े हैं. उन सज्जन ने उनसे पूछा—"क्या आपको अभी तक बस नहीं मिली?"

ठाकुर साहब बोले, "जी, अब मिलने ही वाली है—मैं गिनता रहा हूं, साठ बसें अब तक आ चुकी हैं, ६१ वीं आती ही होगी!"

"जिस समय मैंने मोटर खरीदी थी उस समय आपकी कंपनी ने हमें गारंटी दी थी कि दो साल तक अगर कोई टूट-फूट होगी, तो कंपनी उसकी पूर्ति कर देगी," श्री जीवनसहाय ने कंपनी मैनेजर से कहा.

"हां हां, ठीक है," मैनेजर ने विश्वास दिलाया, "कंपनी अपने वादे पर आज भी कायम है."

"कल मोटर चलाते वक्त मेरे आगे के चार दांत टूट गए, कंपनी से नए दिलवाने की कृपा करें!" श्री जीवनसहाय ने बड़ी आजिजी से कहा.

•

सुखरामदास बलरामदास से कहने लगे—

"पहली बात तो यह है कि मैंने तुम्हारे पास से छतरी ली ही नहीं. अगर ली होगी तो वापस कर दी होगी. फिर अगर वापस न की होगी तो अभी वापस करने का सवाल ही नहीं उठता. तुम क्या नहीं समझते कि इसकी भी वजह है? देख नहीं रहे हो, पानी बरसना शुरू हो गया है!"

•

गांव में एक दर्जी दीवाला निकालकर दूकान उठाकर चलता बना. कोई कहता —"मेरा कपड़ा ले गया!" कोई कहता, "मेरी मशीन ले गया!" तभी वहां बुद्धूचंद आ पहुंचा और रो-रोकर कहने लगा—"हाय राम! अब मैं क्या करूं—वह बदमाश मेरे पैंट का माप भी अपने साथ ले गया!"

•

चेतराम जी रास्ते पर चले आ रहे थे कि एक सनसनाता पत्थर उनके कान को छूता हुआ निकल गया और वह बाल-बाल बच गए. जिस घर से पत्थर आया था उसके दरवाजे पर खड़े एक आदमी से उन्होंने शिकायत की कि अभी अभी आपके लड़के ने मुझ पर पत्थर फेंका है!

उस आदमी ने पूछा, "कहां लगा वह पत्थर आपके?"

"लगा नहीं," चेतराम जी बोले, "भाग्य से मैं बच गया."

"तब तो वह मेरा लड़का नहीं होगा, कोई और होगा क्योंकि मेरे लड़के का निशाना कभी नहीं चूकता!"

—टंडन

१,००० रुपये के नकद इनाम

पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. २७

सर्वशुद्ध या निकटतम पूर्ति पर ७०० रु., न्यूनतम अशुद्धियों पर ३०० रु.

मानवर्धन व मनोरंजन के साथ साथ धन भी

इस प्रतियोगिता के संकेत-वाक्य बच्चों एवं किशोरों के लिए प्रकाशित पुस्तकों से ही लिये गए हैं. इसलिए जो पाठक सबसे अधिक पुस्तकें पढ़ते होंगे, उनके लिए खेल-खेल में एक हजार रुपये जीतने का यह स्वर्ण अवसर है.

सामने के पृष्ठ पर १२ संकेत-वाक्य दिए गए हैं. प्रत्येक वाक्य में एक शब्द का स्थान डैश लगाकर छोड़ दिया गया है. उसी पृष्ठ पर एक पूर्ति-कूपन है, जिसमें दो पूर्तियां दी गई हैं. जिस क्रमांक का संकेत-वाक्य है, प्रत्येक पूर्ति में उसी क्रमांक के आगे दो शब्द दिए गए हैं. उनमें से एक शब्द सही है, और दूसरा गलत. बस, आप गलत शब्द पर × का निशान लगा दीजिए.

'पराग उद्धरण प्रतियोगिता' में भाग लेने के नियम और शर्तें

१–एक पूर्ति-कूपन में दो पूर्तियां दी गई हैं. आप एक पूर्ति भरें या दोनों––पूरा कूपन बाहरी रेखाओं पर काटकर भेजना होगा. पूर्तियां 'पराग' में प्रकाशित पूर्ति-कूपनों पर ही स्वीकार की जाएंगी. यदि आप केवल एक ही पूर्ति भरें, तो दूसरी पूर्ति को क्रास कर दीजिए, और उसके नीचे पूर्ति क्रमांक आदि कुछ न भरिए.

२–पूरे कूपन की दोनों पूर्तियों का प्रवेश-शुल्क १ रुपया और केवल एक पूर्ति का प्रवेश-शुल्क ५० पैसे है. दोनों में से किसी भी पूर्ति को आप पहली मान सकते हैं. एक ही नाम से आप चाहे जितनी पूर्तियां भेज सकते हैं. एक ही लिफाफे में अनेक नामों और परिवारों की पूर्तियां भेजी जा सकती हैं. लिफाफे के अंदर रखी सभी पूर्तियों का सम्मिलित प्रवेश-शुल्क एक ही पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर, या नकद रसीद से भेज सकते हैं. किंतु ऐसी सभी पूर्तियों के नीचे कुल पूर्तियों की संख्या, उनके क्रमांक, और पूर्ति-कूपन में पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर की रसीद या नकद रसीद का नंबर लिखना अनिवार्य है. पोस्टल आर्डर, या डाकखाने से मिली मनी आर्डर की रसीद, या नकद रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य नत्थी करके भेजिए. डाक-टिकट या करेंसी नोट प्रवेश-शुल्क के रूप में स्वीकार नहीं किए जाएंगे. आप कार्यालय में नकद रुपया जमा करके या डाक-खर्च सहित मनी आर्डर भेजकर ५० पैसे मूल्य की चाहे जितनी नकद रसीदें प्राप्त कर सकते हैं और उन्हें अगले चार महीने तक, प्रवेश-शुल्क के रूप में, पूर्तियों के साथ नत्थी कर सकते हैं.

३–स्थानीय प्रतियोगी अपनी पूर्तियां 'टाइम्स आफ इंडिया भवन' के प्रवेश द्वार पर बनी 'स्थानीय प्रवेश पेटी' में डाल सकते हैं. स्थानीय या डाक से आने वाली सभी पूर्तियों के लिफाफों के खुलने वाली तरफ भेजने वाले का पता, तथा उनके पीछे यह पता लिखा होना चाहिए––**'पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. २७', प्रतियोगिता विभाग, पोस्ट बैग नं. २०७, टाइम्स आफ इंडिया भवन, बंबई–१.** मनी आर्डर फार्मों और रजिस्टरी से भेजे जाने वाले लिफाफों पर 'पोस्ट बैग नं. २०७' न लिखें. पोस्टल आर्डर क्रास कर दें. उसमें 'पाने वाले' के स्थान पर **'पराग उद्धरण प्रतियोगिता नं. २७'** और 'पोस्ट आफिस' के आगे––**'बंबई–१'**––लिखें. कृपया संपादक के नाम पूर्तियां या शुल्क न भेजें.

४–प्रथम पुरस्कार ७०० रु. उन प्रतियोगियों को मिलेगा, जिनकी पूर्तियों में संकेत-वाक्यों के सही पूरक शब्दों पर निशान नहीं होंगे, और सभी गलत शब्दों पर निशान लगे होंगे. यदि ऐसी कोई पूर्ति प्राप्त न हुई, तो उसके निकटतम अशुद्धियों वाली पूर्तियों पर प्रथम पुरस्कार दिया जाएगा. द्वितीय पुरस्कार ३०० रु. प्रथम पुरस्कार प्राप्त पूर्तियों से निकटतम अशुद्ध पूर्तियों पर प्रदान किया जाएगा. समान अशुद्धियों के एक से अधिक विजेताओं को घोषित पुरस्कार बराबर बराबर बांटे जाएंगे.

५–अपना नाम और पता प्रत्येक पूर्ति-कूपन पर सुपाठ्य और स्पष्ट अक्षरों में लिखिए. डाक में खो जाने वाली, विलंब से प्राप्त होने वाली, या गंदी व कटी-फटी पूर्तियां प्रतियोगिता में शामिल नहीं होंगी.

६–सभी पूर्तियां कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि सोमवार, ८ फरवरी १९७१ है. अपनी पूर्तियां भेजने के लिए अंतिम तिथि की प्रतीक्षा न कीजिए. निर्धारित अवधि के प्रारंभिक दिनों में ही पूर्तियां भेज देने से आप अनेक भूलों से बच सकते हैं. सर्वशुद्ध शब्दावली तथा संबंधित पुस्तकों व पुरस्कार विजेताओं की सूची 'पराग' के अप्रैल १९७१ के अंक में प्रकाशित की जाएगी.

७–प्रतियोगी को इस प्रतियोगिता से संबंधित प्रत्येक विषय में प्रतियोगिता संपादक का निर्णय अंतिम रूप से मान्य होगा. वैधानिक रूप से विवादास्पद विषयों में बंबई के संबद्ध न्यायालय को ही निर्णय देने का अधिकार होगा.

८–नियमों के प्रतिकूल तथा पूर्ति-कूपनों में आवश्यक विवरण से रिक्त कोई भी पूर्ति प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं की जाएगी. 'पराग' तथा संबद्ध प्रकाशनों के कर्मचारियों को इसमें भाग लेने का अधिकार नहीं होगा. ●

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. २७ के संकेत-वाक्य

१. अगले ही क्षण मौत की भयानक तथा कातर चीख----में गूंज उठी.

२. जब तक वह सम्हलती, शिवाजी के घोड़े----की तरह उनसे आ टकराए.

३. न तो सदा की भांति आपके हृदय में अब कोई----है और न हाथ में अस्त्र-शस्त्र हैं.

४. राजा ने मन में समझ लिया कि वह कोई---- व्यक्ति है.

५. उसके पांवों को जैसे किसी ने----लिया था. हिलने तक की उसमें शक्ति नहीं रही.

६. हां, वह सोमा ही थी, उसकी खोई हुई बहन. वह अपने ही ध्यान में----रही थी.

७. 'बापू, बोलो नहीं, बोलो नहीं, मुझसे नहीं----जाता.'

८. घोर अपराध आज तुम्हारे सीस पर----रहा है, राजन्!

९. ----ने उसे तीर, तलवार, घुड़सवारी और नेजाबाजी की पूरी शिक्षा दी.

१०. तोपों की गड़गड़ाहट में पंजाब का झंडा दुर्ग पर ----गया.

११. समाज-सुधारकों ने एक स्वर से कहा, 'अवश्य-अवश्य, यह----इसी के योग्य है.'

१२. वह बड़ी आशा से----की प्रतीक्षा करने लगा.

यहां से काटिए

पृष्ठ :

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. २४ का परिणाम

सर्वशुद्ध हल पर ४ प्रतियोगियों ने प्रथम पुरस्कार जीता

सही उत्तर : १–तार, २–वयस्क, ३–पिंडी, ४–पढ़ने, ५–जाने, ६–लाल, ७–जमादार, ८–शानवाला, ९–बाल, १०–जाड़ा, ११–बाघ, १२–मचान.

'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता नं. २४ में चार सर्वशुद्ध हल प्राप्त हुए. इसलिए प्रथम पुरस्कार सर्वशुद्ध हल पर चार प्रतियोगियों ने जीता, जिनमें से प्रत्येक को १७५ रुपये प्राप्त हुए. इसी प्रकार एक अशुद्धि पर १९ प्रतियोगियों को पुरस्कार मिले, इनमें से प्रत्येक को १५ रुपये ७९ पैसे प्राप्त हुए.

अगर आपको पूरा भरोसा है कि आप पुरस्कार के हकदार हैं और आपका नाम पुरस्कार विजेताओं की सूची में नहीं है, तो आप २० जनवरी १९७१ से पूर्व **प्रतियोगिता संपादक, 'पराग' उद्धरण प्रतियोगिता, पोस्ट बैग नं. २०७, टाइम्स आफ इंडिया प्रेस, बंबई–१** के पते पर एक पत्र लिखें. उस पत्र में अपनी पूर्ति की अशुद्धियों की संख्या, पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर रसीद या नकद रसीद का नंबर दें. साथ में जांच की फीस के रूप में एक रुपया मनी आर्डर या

हा पूरा वितरित

है. ए
है. ए
सम्मि
नीचे
का
के
प्र मेहता,
लिमिटेड,
है उ.प्र.).

र. सांची.
–प्रशांत,
नकुमार
ली–९.
संवेदनशर

१७१.
उपर्युक्त
उपर्युक्त
तुह और
१–बाघ

: ५०

kissekahani.com

ठोस कार्टून :

एक चमचा वह होता है, जो भोजन करने या दवा पीने के काम आता है. इसके अलावा एक चमचा और भी होता है जो मक्खन लगाने का काम करता है, खुशामदी होता है, चापलूस होता है, पिछलग्गू होता है! ऐसे चमचों का चित्रण करने के ही लिए श्री सत्यस्वरूप दत्त ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की कतरनों का सहारा लेकर यह ठोस कार्टून तयार किया है.

एक ही धुलाई में ३ तरह से काम करके...

डेट कहीं अधिक सफ़ेद धुलाई देता है

— अन्य पाउडरों के मुक़ाबले

देखिए, यह कैसे और क्यों होता है....

१ **डेट** का विशेष शोधक तत्व कपड़ों में शीघ्रता से प्रवेश कर अन्दर बैठी मैल को भी जड़ से हटा देता है — कपड़े साफ़ हो जाते हैं।

२ **डेट** मैल को निकाल देने के बाद उन्हें दुबारा जमने नहीं देता — कपड़े साफ़ हो कर साफ़ बने रहते हैं!

३ **डेट** अतिरिक्त सफ़ेदी देता है — कपड़े पहले से कहीं अधिक सफ़ेद और उजले निखर आते हैं! (नील या सफ़ेदी लाने वाले अन्य पदार्थ मिलाने की ज़रूरत नहीं)

आज ही ख़रीदिए- डेट !

एस्टिक ऑयल मिल्स, बम्बई

SHLPI HPMA 35A/TD HIN

डाक-टिकट

गांधी

के

रूप

अनेक

—राजराज

(गांधी शताब्दी

जारी किए गए कुछ

'पराग' के मार्च, मई

किया गया था. इस

पर डाक टिकट निकाले

चय देकर इस लेखमा

एशियाई देशों में

दिसंबर ६९ में ईरान

एक विशेष टिकट

रियाल हैं और इसप

मुद्रा भूरे रंग में छा

भूमध्य सागर

इस अवसर पर २६

जारी किए. समान

क्रमशः २५ व ७५ मि

गांधी जी का आवक्ष

अफ्रीका के पश्चि

१४ वां अफ्रीकी दे

विशेष टिकट जारी

शित इन टिकटों का

इन्हें हरे व नीले रंगों

जी का चित्र गहरे भू

दक्षिणी अमरी

ट्रिनीडाड टोबेगो द्वीप

१५ फरवरी ७०

kissekahani.com

डाक-टिकटों में

गांधीजी के रूप अनेक (४)

—राजराज जैन

(गांधी शताब्दी के अवसर पर विभिन्न देशों द्वारा जारी किए गए कुछ डाक-टिकटों का सचित्र परिचय 'पराग' के मार्च, मई व जून ७० के अंकों में प्रकाशित किया गया था. इस बीच कुछ और देशों ने भी गांधी जी पर डाक टिकट निकाले. इस अंतिम लेख में उनका परिचय देकर इस लेखमाला को समाप्त किया जा रहा है.)

एशियाई देशों में भारत, भूटान व शरजाह के बाद दिसंबर ६९ में ईरान ने गांधी शताब्दी के अवसर पर एक विशेष टिकट जारी किया. इसका मूल्य १४ रियाल है और इसपर गांधी जी की मुस्कान मंडित मुद्रा भूरे रंग में छापी गई है (चित्र सं. ८).

भूमध्य सागर स्थित साइप्रस द्वीप की सरकार ने इस अवसर पर २६ जनवरी ७० को दो विशेष टिकट जारी किए. समान डिजाइन वाले इन टिकटों का मूल्य क्रमशः २५ व ७५ मिल्स है और इनपर गहरे भूरे रंग में गांधी जी का आवक्ष चित्र है (चित्र सं. ४ व ६).

अफ्रीका के पश्चिमी तट पर स्थित टोगो गणराज्य १४ वां अफ्रीकी देश है, जिसने इस अवसर पर दो विशेष टिकट जारी किए. २ अक्तूबर ६९ को प्रकाशित इन टिकटों का मूल्य क्रमशः ३० और ९० फ्रैंक है. इन्हें हरे व नीले रंगों में छापा गया है जिनपर गांधी जी का चित्र गहरे भूरे रंग में है (चित्र सं. १ व ३).

दक्षिणी अमरीका के उत्तरी तट के पास स्थित ट्रिनीडाड टोबेगो द्वीप समूह ने भी शताब्दी के अवसर पर १५ फरवरी ७० को दो विशेष टिकट जारी किए. इनमें से पहले टिकट का मूल्य १० सेंट है और इसे नीले, काले, पीले, लाल एवं रुपहले रंगों में छापा गया है इस पर महात्मा गांधी की पूर्णाकार खड़ी मूर्ति का चित्र अंकित है (चित्र सं. २). ३० सेंट मूल्य के दूसरे टिकट पर लाल रंग की पृष्ठ भूमि पर गांधी जी का गोलाकार चित्र, तिरंगा ध्वज एवं सुनहरी रंग में अशोक चक्र अंकित है. डिजाइन, छपाई, रंगों का चुनाव आदि सभी दृष्टियों से यह सर्वोत्तम गांधी-टिकट माना जा सकता है (चित्र सं. ५).

द. अमरीका के युरुग्वे राज्य का विशेष गांधी टिकट २६ जनवरी ७० को जारी किया गया. इसका मूल्य १०० पैसोज है और इसपर गांधी जी के चित्र के पीछे विशाल भारतीय जन-समुदाय को दिखाया गया है. यह टिकट इतना लोकप्रिय हुआ कि अब सरलता से उपलब्ध नहीं होता.

द. अमरीका के पश्चिमी किनारे पर स्थित चिली द्वारा जो दो विशेष टिकट जारी किए गए, उनका मूल्य ४० सेंटसीयोज एवं १ एस्क्यूडो है. इन्हें क्रमशः हलके हरे और हलके गेरुआ रंग में छापा गया है (चित्र सं. ७ व ९).

इस प्रकार गांधी शताब्दी पर विशेष डाक-टिकट जारी करने वाले देशों की संख्या ३७ हो गई है, जिन्होंने कुल मिलाकर ७१ विशेष गांधी टिकट जारी किए. इन सब टिकटों की सम्मिलित कीमत लगभग ४०० रुपये है. ●

गवर्नमेंट कॉलेज, भीलवाड़ा (राजस्थान).

स्वेटर के फंदे

(पृष्ठ २७ से आगे)

मां जी सारे दिन घर की व्यवस्था देखतीं. पहले जितने नौकर भी तो घर में नहीं रहे थे. खाली समय में वह या तो छालियां काटतीं या स्वेटर बुना करतीं.

छमाही परीक्षा पास आ गई थी. उस दिन बाबू जी चारों बच्चों को समेटे बैठे थे. दुपहर से शाम हो गई थी. बाबू जी खुद तो उठे ही नहीं, बच्चों को भी न उठने दिया.

मां जी झल्ला उठीं—"आखिर तुम्हें हो क्या गया है? इन बच्चों को कब तक पढ़ाओगे? कब तक बैठेंगे ये लोग, खेलने नहीं जाएंगे क्या?"

"खेलेंगे, खेलेंगे... दीपक, तू ये दो सवाल और कर ले, फिर तेरी चाची आए तो यह सारा काम दिखा देना..." बाबू जी हंसते हुए बोले—"खुश हो जाएगी वह तेरा इतना सारा काम देखकर...और रीता, तूने अंग्रेजी के वह सारे जवाब तो अभी लिखे ही नहीं...चाची तेरी क्या कहेगी? दीपक ने इतना काम किया, रीता पिछड़ गई. ना बाबा, ना, ऐसा तो हो ही नहीं सकता."

रीता मुस्कराने लगी. कुछ भी हो, बाबू जी की सारे दिन की मेहनत से उसे कुछ तो पढ़ना ही पड़ता था. पढ़ती तो कक्षा में भी धीरे-धीरे तेज होने लगी. जो बच्चे रेंगना भी नहीं चाहते थे, वे अब जैसे ओलिम्पिक रेस में दौड़ लगाने की इच्छा करने लगे थे.

●

उस दिन मां जी आईं, तो पूछने लगीं—"राजू कह रहा था इंश्योरेंस का पैसा मंजूर हो गया है. भला कब तक मिल जाएगा? बीमों नहीं, तो एक दूकान तो खुल ही जाएगी न, क्यों?"

बाबू जी चारों बच्चों को समेटे बैठे थे—"हां रे, देवम्, तूने इतिहास के सवाल कर लिये, जो तेरी अम्मां ने करने को दिए थे?" उन्होंने जैसे मां जी की बात को सुना ही नहीं. वह झल्ला गईं—"मैं पूछती हूं तुम्हें हो क्या गया है? उन्होंने हाथ का स्वेटर एक ओर पटका और बाबू जी के हाथ से पुस्तक छीन ली—"कहां तो पढ़ाई-लिखाई के नाम से छूत के रोग की तरह भागते थे, कहां अब चिरचिटे की तरह चिपट गए हो. जैसे दुनिया में दूसरी कोई बात ही न रह गई हो!"

"हां..हां...किताब क्यों छीन ली मेरी? अपना स्वेटर बुनो न तुम. हाथ से काम करो, मुंह से बात करो... तुम्हारे स्वेटर के फंदे गिर जाएंगे."

"गिर जाने दो फिर उठा लूंगी..." मां जी खिसिया कर बोलीं—"पर मैं पूछती हूं दूकानों का रुपया....!"

मां जी की बात सुनकर बाबू जी की आंखों में जैसे कोई ज्योति-सी जल उठी. उन्होंने एक तेज निगाह से मां जी को देखा और जैसे बड़े गहरे से बोले—"तुम अपने स्वेटर के फंदे उठा लोगी...मुझे मालूम है अरूर उठा लोगी, पर मैं... मैं जो फंदे दिन-रात डालने की कोशिश कर रहा हूं...इनमें से एक भी गिर गया, तो फिर नहीं डाल सकूंगा..."

आंखें फाड़े मां जी देखती ही रह गईं. अरे, इनका कहीं दिमाग तो नहीं फिर गया—दिन-रात सोच में डूबे डूबे, इन अनजानी किताबों में माथा-पच्ची करते-करते...वह रुआंसी हो गईं और बोलीं—"ये दूकानें क्या जल गईं..."

"...कि हमारे घर में उजाला कर गईं!" बाबू जी ने बात पूरी कर दी.

मां जी को जैसे चक्कर आ गया. पागलपन का कोई लक्षण तो दिखे. अच्छे भले बैठे-बैठे यह कैसी बहकी-बहकी बातें करने लगे. उनकी आंखों में सचमुच आंसू छलछला आए. बोलीं—"तुम पागल तो नहीं हो गए हो? आज कैसी बातें कर रहे हो? मैं दूकानों की बात कर रही हूं...बीमे का रुपया..."

"देखो, यह रुपया...ये दूकानें ...सब ठीक हैं, पर सब कच्चे धागे हैं. इनसे बुनी जिंदगी, एक झटके में टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो सकती है. हम सोचते थे इतना धन है, इतनी साख है कि सात पुश्तें बैठ कर खाएंगी तो भी न चुकेगा... पर क्या रहा? एक हल्के से झटके में सब टूटकर बिखर गया न?"

"पर बीमे का पैसा मिलेगा तो..."

"हां मिलेगा .... मिल जाएगा तो बहुत ही अच्छा होगा. श्याम दूकान खोल लेगा. पर मुझे तो उस बीमे से बड़े ये चार बीमों को सहेजना है, श्याम की मां. इनकी जिंदगी के स्वेटर को इतने मजबूत धागों से बुनना है, इतनी हुशियारी से बुनना है कि एक भी फंदा न टूटे, एक भी फंदा न छूटे!"

●

मां जी को जैसे कुछ समझ आ रहा था, कुछ न समझ आ रहा था, एक अनबूझ पहेली बूझती-सी वह खड़ी ही रह गईं.

पर रीता, दीपक, देवम्, और शिवम्—चारों ने उन बातों को सुनकर जैसे उसी समय अपनी अपनी बनी जाने वाली जिंदगी में कुछ और फंदे अपने आप भी डाल लिये—आत्म-विश्वास के, कठोर परिश्रम के, दृढ़ चरित्र के...

और अपने बाबा की डबडबाई गहरी आंखों में उन्हें अपने भविष्य के वे रूप दिखने लगे, जो वे गढ़ रहे थे, बुन रहे थे, हर क्षण...हर पल...

●

१।४ सेंट्रल कालोनी, निकट रेलवे लेवल क्रासिंग,
चेंबूर, बंबई–७१.

(इस स्तंभ म
का परिचय दिया
अपनी ज्ञान की प
की दो-दो प्रतियां

● सरल पंच
विष्णु प्रभाकर; म
संख्या ६२); मू
पटेल (पृष्ठ संख्या
मूल्य : रु. १.५०
६७); लेखक मन
का दिल (पृष्ठ सं
मूल्य : रु. १.६५
रामेश बेदी ; मू
विभाग, सूचना अ
पटियाला हाउस,

पुराने जमा
नाम का एक नगर
राज्य करता था.
महामूर्ख और गंवा
की सलाह पर इ
पंडित विष्णु शर्मा
वज मूर्खों को पढ़ा
पंचतंत्र में पशु-पक्षि
प्रद कहानियां संक
श्री विष्णु प्रभाकर
और मुहावरेदार हि
'लखटकिया'
कथाओं का संग्रह
लेखकों ने लिखा है
रंजन करेंगी, बल्कि
को समझने में भी

आधुनिक भ
आजादी की लड़ा
पटेल को लौह पु
आजादी मिल ज
स्वतंत्र भारत के
एक ऐसा कारनाम
में अमर रहेगा.
अपनी योग्यता औ
और देश की सेवा
किया, उसकी एक
श्री मुकुटबिहारी
'नेताजी सुभा
गई नेता जी की सं

(इस स्तंभ में बच्चों के लिए नव प्रकाशित पुस्तकों का परिचय दिया जाता है, जिससे बच्चे उन्हें पढ़ें और अपनी ज्ञान की प्यास बुझाएं. परिचय के लिए पुस्तकों की दो-दो प्रतियां भेजी जानी चाहिएं. —संपादक)

● सरल पंचतंत्र खंड १ (पृष्ठ संख्या ६७); लेखक : विष्णु प्रभाकर; मूल्य : रु. १.७५ ● लखटकिया (पृष्ठ संख्या ६२); मूल्य : रु. १.५० ● लौह पुरुष सरदार पटेल (पृष्ठ संख्या : ३२); लेखक : मुकुटबिहारी वर्मा; मूल्य : रु. १.५० ● नेताजी सुभाषचंद्र बोस (पृष्ठ संख्या ६७); लेखक मन्मथनाथ गुप्त; मूल्य : रु. १.५० ● शेर का दिल (पृष्ठ संख्या ८६); लेखक : बंसीलाल गुप्त; मूल्य : रु. १.६५ ● गेंडा (पृष्ठ संख्या ५२); लेखक : रामेश बेदी ; मूल्य : एक रुपया; प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-१.

पुराने जमाने में दक्षिण देश में महिलारोप्य नाम का एक नगर था. उसमें अमरशक्ति नामक राजा राज्य करता था. राजा के तीन पुत्र थे. तीनों के तीनों महामूर्ख और गंवार. राजा ने अपने विद्वान मंत्री सुमति की सलाह पर इन राजकुमारों की शिक्षा का भार पंडित विष्णु शर्मा को सौंपा. पंडित विष्णु शर्मा ने इन्हीं बज्र मूर्खों को पढ़ाने के लिए पंचतंत्र की रचना की. पंचतंत्र में पशु-पक्षियों के विषय में रोचक और शिक्षाप्रद कहानियां संकलित हैं. मूल ग्रंथ सरल संस्कृत में है. श्री विष्णु प्रभाकर ने इसी पंचतंत्र को सरल, सुबोध और मुहावरेदार हिंदी भाषा में प्रस्तुत किया है.

'लखटकिया' में विभिन्न राज्यों की १६ प्रसिद्ध लोककथाओं का संग्रह है. इन कथाओं को भिन्न-भिन्न लेखकों ने लिखा है. ये कथाएं न केवल बच्चों का मनोरंजन करेंगी, बल्कि भिन्न भिन्न प्रदेशों के लोक जीवन को समझने में भी बच्चों की सहायता करेंगी.

आधुनिक भारत के निर्माताओं और देश की आजादी की लड़ाई के योद्धाओं में सरदार वल्लभ भाई पटेल को लौह पुरुष के नाम से याद किया जाता है. आजादी मिल जाने के बाद ५८४ रियासतों का स्वतंत्र भारत के साथ एकीकरण का काम ही उनका एक ऐसा कारनामा है जो आधुनिक भारत के इतिहास में अमर रहेगा. एक साधारण परिवार में जन्म लेकर अपनी योग्यता और ईमानदारी से इतने ऊंचे उठकर और देश की सेवा करके उन्होंने जो उदाहरण प्रस्तुत किया, उसकी एक झलक 'लौह पुरुष सरदार पटेल' में श्री मुकुटबिहारी वर्मा ने प्रस्तुत की है.

'नेताजी सुभाषचंद्र बोस' बच्चों के लिए लिखी गई नेता जी की संक्षिप्त जीवनी है. लेखक हैं श्री मन्मथनाथ गुप्त, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में खुद भी एक क्रांतिकारी के रूप में सक्रिय भाग लिया था. बच्चों को इस सर्वप्रिय महान लोकनायक के देशभक्ति, साहस, त्याग और बलिदान के अमर कारनामों को पढ़ कर जीवन में निर्भीकता से कर्तव्यमार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी.

'ऐसे थे बापू' गांधी शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित महात्मा गांधी के कुछ रोचक प्रसंगों का संकलन है. इसमें चुने हुए प्रसंगों का संग्रह इस तरह किया गया है कि गांधी जी के जीवन के विभिन्न पहलुओं की एक झांकी बच्चों को मिल सके. सभी प्रसंग रोचक हैं.

'शेर का दिल' में २० प्रसिद्ध डोगरी लोककथाएं दी गई हैं. जिनमें कुछ देवताओं संबंधी हैं, कुछ नीतिकथाएं हैं, कुछ का संबंध परियों और दैत्यों से है तो कुछ पशु-पक्षियों को ले कर लिखी गई हैं. सभी कथाएं सचित्र हैं और सरल भाषा में लिखी गई हैं.

गेंडा आदिम युग के उन भीमकाय जंतुओं में गिना जाता है जिनकी वंश-परंपरा अभी धरती से लुप्त नहीं हुई है. यह असम और अफ्रीका के कुछ भागों में पाया जाता है. इसी दुर्लभ जानवर का परिचय इस गैंडा नाम की इस पुस्तक में दिया गया है.

● जादूगर कबीर (पृष्ठ संख्या १६३); मूल लेखक : विजय गुप्त मौर्य ; रूपांतरकार : मनहर चौहान ; मूल्य : चार रुपये ● समुद्र का शेर (पृष्ठ संख्या ११६) ; लेखक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल; मूल्य : साढ़े तीन रुपये; प्रकाशक: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २। ३५ अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली–६.

दिलीप और लता नाम के दो भाई-बहन प्रोफेसर कबीर की प्रयोगशाला में उत्सुकतावश एक विशेष शर्बत पीकर कीट-पतंगों के आकार में बदल जाते हैं. अब उनकी तलाश में प्रोफैसर को वही शर्बत पीकर अपने को मकोड़े जैसे आकार में बदलना पड़ता है. और इसके बाद शुरू होती है कीड़े-मकोड़ों की अद्भुत दुनिया की साहसपूर्ण यात्रा. इसी यात्रा को 'जादूगर कबीर' में रोचक कथानक के रूप में पेश किया गया है. मूल कथानक के ताने बाने में विभिन्न कीट-पतंगों के विषय में अद्भुत जानकारी बड़ी कुशलता से पिरोई गई है.

मूल उपन्यास गुजराती में है जिसका अनुवाद श्री मनहर चौहान ने अपनी सरल सुबोध शैली में प्रस्तुत किया है.

'समुद्र का शेर' एक साहसी बालक बालू की कथा है जो मछुए का बेटा होकर भी पानी से डरता है, लेकिन वक्त आने पर वही बालक बड़ा होकर पुर्तगीज उपनिवेशवादियों से टक्कर लेता है. कालीकट का प्रसिद्ध सम्राट जामोरिन उसे उसके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए 'समुद्र का शेर' उपाधि से विभूषित करता है. उपन्यास चार-पांच सौ साल पहले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है और अपनी मातृभूमि पर प्राण होम देने की शिक्षा देता है.

—लक्ष्मीचंद्र गुप्त

गीदड़ बोला

भालू आग जला कर उसमें
सेंक रहा था केक!
गीदड़ बोला, "मामा, तुममें
बिलकुल नहीं विवेक!

केक सेंकते ऐसे जैसे—
हो यह बैंगन - आलू!
आधी तो जल गई, मुझे दो,
बची-खुची मैं खा लूं!"

—यादराम 'रसेंद्र'

kissekahani.com

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशुगीत

पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु गीत छापे जा रहे हैं. इन शिशु गीतों के चयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है. क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं. ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चार से छह साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें. इन से मुहावरेदार हिंदी सरलता से जबान पर चढ़ जाती है.

पक्के फ्रेंड

बिल्ली बोली, "चूहे राजा,
आज मिलाओ हैंड;
बन जाएंगे हम-तुम सचमुच,
बिलकुल पक्के फ्रेंड!"

चूहा हंस कर बोला, "मौसी,
मुझ पर दया दिखाओ!
दरवाजे पर बैठा कुत्ता,
उससे हाथ मिलाओ!"

—निर्मला तिवारी

जन्म-दिवस पर...

जन्म-दिवस पर भालू जी ने
खूब मनाई मौज;
नीबू के शरबत से उसने
भरवा डाला हौज!

हाथी बोला, "जुग जुग जीवो,
प्यारे, बरस हजार!"
एक सांस में सारा शरबत
पी कर ली न डकार!

—नारायणलाल परमार

गायक की गैया

इक गायक से मेरे नाना,
ले आए इक गैया,
मोटी-तगड़ी गोल नयन की,
भोली भाली मैया!

खा लेती थी, सूखा-गीला,
सभी तरह का चारा;
प्यार सभी से करती घर में,
नहीं किसी को मारा!

पर आदत थी इक उसमें भी,
कहते मेरे नाना—
"दूध सदा से ही देती है
सुन अंग्रेजी गाना!"

—पंकज गोस्वामी

खोटी अठन्नी

मिली अठन्नी चूहे जी को
पड़ी राह में आज;
फूले नहीं समाए जैसे
हुआ उन्हीं का राज!

दे कर हलवाई को बोले,
"दे दो झट दस रोटी!"
हलवाई ने मुंह पर मारी,
बोला, "है यह खोटी!"

—निरंजनलाल मालवीय 'अविचल'

रीव्ज़

रीव्ज पेंटर पॉट एक उड़न खुस्सार था। उससे इन्द्रधनुष को बचाने और घर वापस लाने के लिए कहा गया। इन्द्रधनुष बादलों के देश में बिजली के कौंदों की तलवारों और भालों से लैस एक बड़े दानव की क़ैद में थी। बादलों के देश में किसी भी जाने वाले पर बिजली गिरने का पूरा भय था।

रीव्ज पेंटर पॉट आकाश में उड़ चला। यहाँ तक कि वह बादलों के देश में पहुंच गया।

मेघराज, जो काले दांतों वाला एक बड़ा दानव था, रीव्ज पेंटर पॉट पर बड़ी कड़कदार आवाज़ में हँसा।

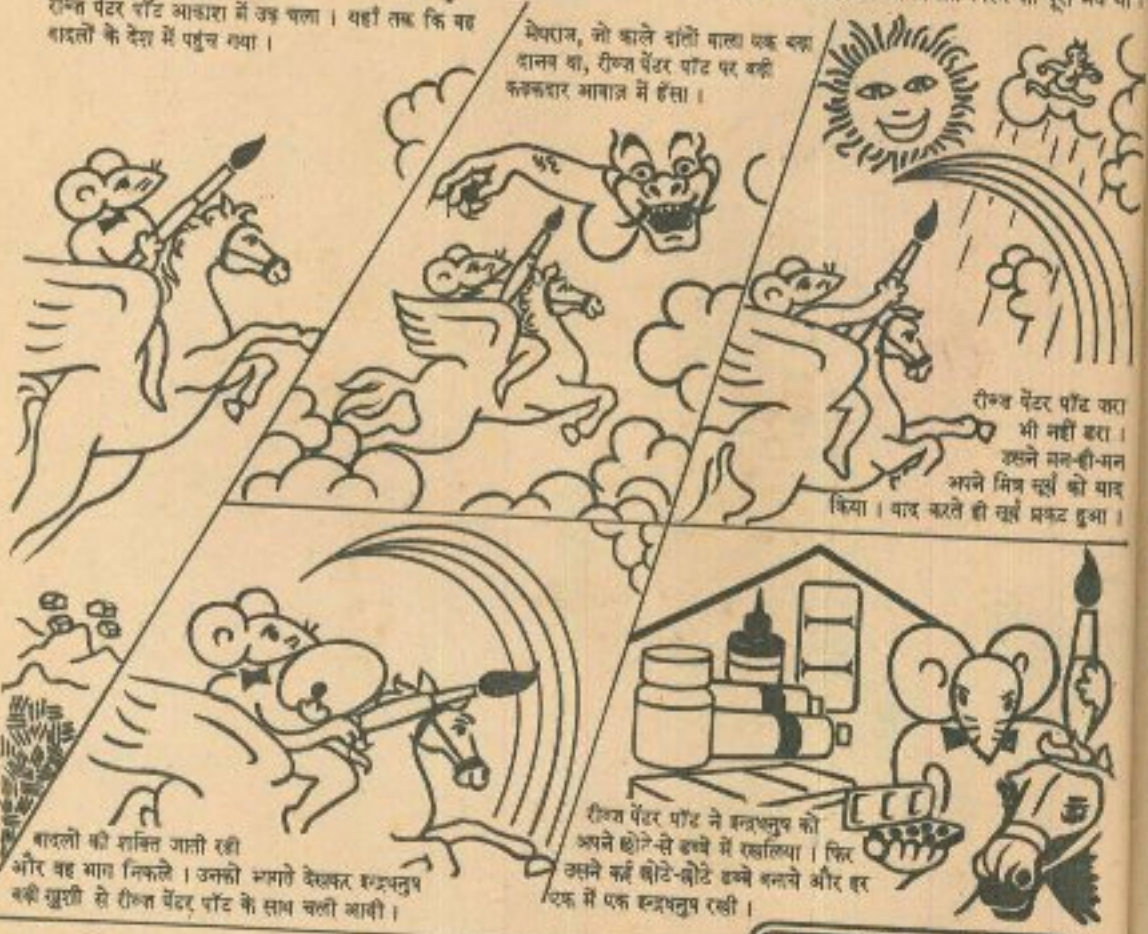

रीव्ज पेंटर पॉट ज़रा भी नहीं डरा। उसने मन-ही-मन अपने मित्र सूर्य को याद किया। याद करते ही सूर्य प्रकट हुआ।

बादलों की शक्ति जाती रही और वह भाग निकले। उनको भागते देखकर इन्द्रधनुष बड़ी खुशी से रीव्ज पेंटर पॉट के साथ चली आयी।

रीव्ज पेंटर पॉट ने इन्द्रधनुष को अपने छोटे-से डब्बे में रखलिया। फिर उसने कई छोटे-छोटे डब्बे बनाये और हर एक में एक इन्द्रधनुष रखी।

आप भी रीव्ज के इन्द्रधनुषी वाटरकलर्स, पोस्टर कलर्स, इन्क्स, मार्कर और दूसरी विविध चित्र-कला सामग्रियाँ इस्तेमाल करके आश्चर्यपूर्ण चित्र बना सकते हैं। रीव्ज चित्रकला सामग्रियों के इस्तेमाल से छोटे चित्रकार बड़े चित्रकार बनते हैं।
अपने रीव्ज कलर्स अभी ले आइये!

अंधियारे बादल मुर्दाबाद! सभी रीव्ज पेंटर्स ज़िन्दाबाद!

अगर आप खेल और मनबहलाव के लिए रीव्ज के बाईस रंग खरीदेंगे तो पेंटर पॉट आप का भी दुलारा हो जाएगा।

ARMS R 9030 Hin

बच्चो, नीचे का चित्र
हमारे पास २० जन
कल्पना से और ज्यादा
भरने वाले तीन प्रतियो
रंग भरने वालों की उ
चित्र के नीचे वाला कू
नं. १०३), पो. आ. ब

'प
नाम औ
पूरा पता

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता १०३

बच्चो, नीचे का चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० जनवरी '७१ तक भेज दो. हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्र की पृष्ठभूमि को तुम अपनी कल्पना से और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करने की तुम्हें स्वतंत्रता है. सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियों को एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमें से दो के चित्रों को छापा भी जाएगा. लेकिन रंग भरने वालों की उम्र १६ साल से अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोग में लाने चाहिएं. चित्र के नीचे वाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है. पुर्तियां भेजने का पता : संपादक, 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. १०३), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१.

यहां से काटो

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन
'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता – १०३

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

खुद आज़माइए। धुलाई के बाद कपड़ों की आखिरी बार खंगालते समय पानी में थोड़ा सा टिनोपाल मिला लीजिए; फिर देखिए... शानदार जगमगाती सफ़ेदी! टिनोपाल की सफ़ेदी! हर तरह के कपड़े—कमीज़, साड़ी, चादर, तौलिया, आदि—टिनोपाल से जगमगा उठते हैं।
और लाभ? प्रति कपड़ा एक पैसा से भी कम। टिनोपाल खरीदिए—'रेग्युलर पैक' 'इकॉनमी पैक,' या 'बाल्टी भर कपड़ों के लिए एक पैक'।

® टिनोपाल जे. आर. गायगी एस. ए., बाल, स्विट्ज़रलैन्ड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

सुदृढ़ गायगी लि., पो. ओ. बॉक्स ११०५०, बम्बई २० बी आर

Shilpi HPMA YA/70 Hin